हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

सितम्बर, 2014 वर्ष 13 अंक 07

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

ईदे क़ुर्बां

ईदे क़ुर्बां आगई, ऐ मोमिनों क़ुर्बानी दो
माल वालो ज़ब्ह कर, अल्लाह को राज़ी करो
यह जान लो क़ुर्बानी का, हो जानवर अच्छा भला
उम्र में वह कम न हो, यह जान लो तुम मसअला
बकरा हो तो साल भर का, और दो साला भैंस हो
गर मुयस्सर हो तुम्हें, तो पाँच साला ऊँट हो
कम से कम यह उम्र है क़ुर्बानी करने के लिए
इससे ऊपर उम्र की जो चाहे क़ुर्बानी करे
उम्र में गर कम लगे, तो दाँता होना देख लें
बीच के दो दाँत ऊँचे होते हैं यह देख लें
या ख़ुदा तू मोमिनो की करले क़ुर्बानी क़बूल
और नबीये पाक पर हो तेरी रहमत का नुज़ूल

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

क़ुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
मैं दाँत देख कर ही पड़वा ज़ब्ह	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	6
जगनायक	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	8
हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में	हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0	14
ईमान बाक़ी रखने के लिए दीनी	मौ0 सै0 मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी	16
मानवता का स्तर	मौ0 सै0 अबुल हसन अली नदवी	18
इख़्लास और उसके बरकात	मौ0 सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0	23
फ़ारसी की दो तरकीबें	इदारा	25
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	27
मानवता का संदेश	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी	35
इस्लाम में विवाह	इदारा	36
हाजी अब्दुर्रज़्ज़ाक़ की वफ़ात	इदारा	38
उर्दू सीखिए	इदारा	39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बक़रः

अनुवाद– और कहा बनी इस्राईल से उनके नबी ने कि तालूत की सल्तनत की निशानी यह है कि आये तुम्हारे पास एक सन्दूक़ कि जिसमें तसल्लीये खातिर है तुम्हारे रब की तरफ से और कुछ बची हुई चीजें हैं उनमें से जो छोड़ गयी थीं मूसा और हारून अलैहिस्सलाम की औलाद, उठा लायेंगे उस सन्दूक़ को फरिश्ते, बेशक उसमें पूरी निशानी है तुम्हारे वास्ते अगर तुम यक़ीन रखते हो,1(248) फिर जब बाहर निकला तालूत फौजें लेकर कहा बेशक अल्लाह तुम्हारी आज़माइश करता है एक नहर से, सो जिसने पानी पिया उस नहर का तो वह मेरा नहीं, और जिसने उसको न चखा तो वह बेशक मेरा है मगर जो कोई भरे एक चुल्लू अपने हाथ से, फिर पी लिया सबने उसका पानी, मगर थोड़ों ने उनमें से, फिर जब पार हुआ तालूत और ईमान वाले उसके साथ, तो कहने लगे ताकत नहीं हम को आज जालूत और उसके लशकरों से लड़ने की, कहने लगे वह लोग जिनको ख्याल था कि उनको अल्लाह से मिलना है, अकसर थोड़ी जमाअत ग़ालिब हुई है बड़ी जमाअत पर अल्लाह के हुक्म से, और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है2(249)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. बनी इस्राईल में एक सन्दूक़ चला आता था, उसमें तबर्रुकात थे हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम वगैरह अंबियाये बनी इस्राईल उस सन्दूक़ को लड़ाई में आगे रखते, अल्लाह उसकी बरकत से फतह देता, जब जालूत ग़ालिब आया उन पर तो यह सन्दूक़ भी वह ले गया था जब अल्लाह तआला को सन्दूक़ का पहुंचाना मंजूर हुआ तो यह किया कि वह काफिर जहां सन्दूक को रखते वहीं "वबा" और "बला" आती, पाँच शहर वीरान हो गये, मजबूर हो कर दो बैलों पर उसको लाद कर हांक दिया फरिश्ते बैलों को हांक कर तालूत के दरवाजे पर पहुंचा गये, बनी इस्राईल इस निशानी को देख कर तालूत की बादशाहत पर यक़ीन लाये और तालूत ने जालूत पर फौज कशी की, और मौसम निहायत गर्म था।

2. हवस से तालूत के साथ चलने को सब तैयार हो गये तालूत ने कह दिया कि जो कोई जवान ताकतवर और बे फिक्र हो वह चले, ऐसे भी अस्सी हजार निकले, फिर तालूत ने उनको आज़माना चाहा, एक मंजिल में पानी न मिला, दूसरी मंजिल में एक नहर मिली, तालूत ने हुक्म कर दिया कि जो एक चुल्लू से जियादा पानी पिये वह मेरे साथ न चले, सिर्फ 313 उनके साथ रह गये और सब जुदा हो गये, जिन्होंने एक चुल्लू से जियादा न पिया उनकी प्यास बुझी और जिन्होंने जियादा पिया उनको और प्यास जियादा लगी और आगे न चल सके। ❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

ह़ज का बयान

—अमतुल्लाह तस्नीम

अनुवादः अल्लाह के लिए लोगों पर उस घर का हज फर्ज है, जिस आदमी को उस घर तक पहुँचने की कुदरत हो, और जो इन्कार करे तो अल्लाह तआला दुन्या जहाँ से बेनियाज़ है।

(आले इमरानः 97)

ह़ज की फर्जीयत–

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया इस्लाम की बुन्याद पाँच चीज़ों पर है, 1. कल्मये शहादत 2. नमाज़ क़ाइम करना 3. ज़कात देना, 4. खा–नए–काबा का ह़ज करना 5. रमजान के रोजे रखना। (बुख़ारी–मुस्लिम)

ह़ज जिन्दगी में एक बार फर्ज है–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुत्बे में फरमाया, ऐ लोगो! अल्लाह तआला ने तुम पर हज फर्ज किया है तो तुम पर हज करना लाजिम है। एक शख्स ने पूछा या रसूलुल्लाह क्या हर साल? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुप रहे, उन्होंने फिर सुवाल किया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फिर कोई जवाब न दिया, फिर पूछा क्या या रसूलुल्लाह हर साल? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगर मैं तुम्हारे सुवाल पर हां कह देता तो तुम पर हर साल के लिए फर्ज हो जाता, देखो जब मैं खामोश हो जाऊं तो तुम भी सुवाल न करो, अगली उम्मतें अपने नबियों से बहुत सुवाल करने और इख़्तिलाफ करने ही पर हलाक़ हो गयीं, जब मैं तुम को किसी बात का हुक्म दूं और तुम में उसके करने की इस्तिताअत (ताक़त) हो तो ज़रूर करो और जिस बात से मना करूं तो उससे रुक जाओ (मुस्लिम)।

ह़ज्जे मकबूल–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह कौन सा अमल जियादा अफजल है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान अर्ज किया उसके बाद, फरमाया अल्लाह के रास्ते में जिहाद, फिर अर्ज किया, तो फरमाया हज्जे मकबूल।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

उम्र भर का कफ़्फ़ारा–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि जिसने हज किया और कोई बेहयाई का काम न किया और फिस्को फुजूर से बाज़ रहा तो वह गुनाहों से इस प्रकार पाक हो जायेगा जैसे आज पैदा हुआ है। (बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया एक उमरा दूसरे उमरे तक बीच के सारे गुनाहों का कफ़्फारा है और हज्जे मबरूर का बदला जन्नत है। (बुख़ारी–मुस्लिम)

औरतों का जिहाद, हज है–

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह हम जिहाद को अफज़ल अमल समझते हैं तो क्या जिहाद न किया करें, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम्हारे लिए अफज़ल जिहाद हज्जे मबरूर है। (बुख़ारी)

अरफा की फजीलत–

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अरफा के दिन सबसे जियादा अल्लाह तआला अपने बन्दों को *आग* से आजाद फरमाता है। (मुस्लिम)

रमज़ान का उमरा–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रमजान का उमरा हज करने के बराबर है या यह फरमाया कि उस हज के बराबर है जो मेरे साथ किया जाये। (बुख़ारी–मुस्लिम)

माजूर की तरफ से हज–

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि एक औरत ने सुवाल किया या रसूलुल्लाह अल्लाह तआला ने अपने बंदों पर हज फर्ज किया, मेरे बाप पर ऐसे जमाने में फर्ज हुआ कि वह बिल्कुल बूढ़े हो गये, सवारी पर नहीं ठहर सकते तो क्या मैं उनकी तरफ से हज कर सकती हूँ, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हाँ।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत लक़ीत बिन आमिर रज़ि0 से रिवायत है कि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हुए और अर्ज किया या रसूलुल्लाह मेरे बाप बहुत बूढ़े हैं, न हज कर सकते हैं न उमरा और न चलने और सवार होने की ताकत है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम अपने बाप की तरफ से हज व उमरा कर लो (अबू दाऊद–तिर्मिजी)

बच्चे का हज–

हज़रत साइब बिन यजीद रज़ि0 से रिवायत है कि मेरे बाप ने हज्जतुल वदा में मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हज कराया उस समय मैं सात साल का था (बुख़ारी–मुस्लिम)

बच्चे के हज का सवाब माँ को–

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रौहा (एक जगह का नाम है जो मदीने से 36 मील पर है) में एक काफिले से मिले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम लोग कौन हो, अर्ज किया हम मुसलमान हैं, और आप कौन हैं? फरमाया मैं अल्लाह का रसूल हूं, तो एक औरत ने (ऊँट के कजावे से) बच्चे को ऊँचा करके दिखाया और अर्ज किया, क्या इसके लिए हज है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हाँ है, लेकिन सवाब तुम को मिलेगा। (मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

शेष पृष्ठ ....17.. पर

मैं दांत देख कर ही पड़वा करूँगा ज़ब्ह

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

1989 की बात है, मेरी तन्ख्वाह उस वक़्त 700 रूपये माहवार थी, लेकिन मुझ पर कुर्बानी वाजिब थी, बकरईद का चाँद दिख चुका था, लखनऊ के बाज़ारों में कुर्बानी के जानवर बिकने शुरु हो गये थे, मैं भी बाज़ार गया कि कोई बकरा कुर्बानी के लिए खरीद लाऊं मैं एक माह की तन्ख्वाह लेकर नख़्ख़ास के बाज़ार गया मगर वहां तो हजार रूपये से कम का कोई जानवर ही न था, बहुत तलाश किया, एक अन्डू (गैर ख़स्सी) बकरा कम दाम का नज़र आया, मुँह पकड़ कर देखा दो दाँत का था, 500 में तै हुआ खरीद लाया, पड़ोस के बच्चे देखने को दौड़ पड़े, उनको यह बकरा अजीब लग रहा था, कई लोगों ने कहा अन्डू का गोश्त किसी काम का नहीं होता है, एक साहिब ने तो मुझ से पूछ ही लिया, क्या अन्डू बकरे की कुर्बानी हो जाती है? मैंने जवाब दिया क्यों नहीं? इसमें क्या ऐब है, इस का कौन सा अज़्व (अंग) कम है वह खामोश हो रहे। बहर हाल बकरा ज़ब्ह हुआ। लेकिन अब 25 वर्षों बाद 2014 में यहां तनख़्वाहें दस गुना और बहुतों की 15 गुना हैं, तो बकरों की क़ीमतें भी उसी तरह बढ़ीं हैं अब छे हज़ार से कम के बकरे का कोई सुवाल नहीं ज़ियादा की तो कुछ थाह नहीं। पाँच छः हज़ार पाने वाले को अगर अपनी और बीवी की जानिब से कुर्बानी करना हो तो तन्ख़्वाह में गुंजाइश नहीं? अब ऐसा आदमी बड़े जानवर में हिस्सा लेने ही का फैसला करता है।

1956 की बात है जब मैं देहात के एक मदरसे में मुदर्रिस था मुझे घर के लिए कई हिस्सों की ज़रूरत थी, मैं बड़े जानवर की तलाश में निकला, अजीज़ों के एक गांव में एक पड़वा पसन्द किया दाँत देखे तो दांता था, 21 रूपये में तै हुआ, मेरे एक करीबी अज़ीज़ बहुत ख़फ़ा हुए और कहा ग़रज़ देख कर ठग लिया पड़वा 18 रूपये से ज़ियादा का न था, बहर हाल पड़वा लाए और ज़ब्ह किया, पड़वा ज़ब्ह करने में एक मुशकिल यह आती है कि हर जगह पड़वा ज़ब्ह नहीं हो सकता, गाय की कुर्बानी और ज़बीहा क़ानूनन हमारे राज्य में हर जगह मना है, पड़वा मना तो नहीं मगर हर जगह ज़ब्ह नहीं हो सकता हमारे उत्तरी भारत में हिन्दू भाई जो गोश्त खोर (मांसाहारी) हैं वह भी पड़वा या भैंस का गोश्त नहीं खाते बल्कि उनके ज़ब्ह को भी ना पसन्द करते हैं, अल्लाह जाने उनका यह ख़्याल कब बदलेगा, जब कि उनको मालूम है कि कोलकाता में काली के लिए पड़वा काटा जाता है और उसको हिन्दू काटते हैं, नक़्ज़े अम्न (शान्ति भंग होना) के ख़तरे से पाबन्दी लगा रखी है और हर जगह पड़वा ज़ब्ह करने

पर पाबन्दी है और इस काम के लिए हर इलाक़े में कुछ ख़ास जगहों पर पड़वा ज़ब्ह करने की इजाज़त दे रखी है, इसी तरह कुछ कस्साबों को पड़वा, भैंस, भैंसा ज़ब्ह करके गोश्त बेचने की इजाजत दे रखी है। 1956 के मुकाबले से अब पड़वे की क़ीमतें 500 गुना हो चुकी हैं।

जिन जगहों पर पड़वे या भैंसे की कुर्बानी की सरकारी इजाज़त नहीं है वहां पड़वे की क़ुर्बानी पर भी फ़साद हो जाता है इसलिए हम लोग पूरी एहतियात करते हैं और हर जगह पड़वे की कुर्बानी नही करते।

एक और मुश्किल हमारे इलाके की यह है कि हिन्दू भाई अपने पड़वे ज़ब्ह के लिए ख़रीदने वाले के हाथों फ़रोख़्त नहीं करते, साथ ही अगर बाज़ार से ख़रीद कर अपने घर ले आया जाए कि क़ुर्बानी के दिनों में जहां कुर्बानी होती है वहां ले जा कर ज़ब्ह करेंगे इस पर भी हिन्दू भाई कशीदगी का माहौल पैदा कर देते हैं, इन सब वजूह (कारणों) से हम मजबूर होते हैं कि जहां कुर्बानी की इजाज़त है वहीं जानवर खरीदें, वहीं जानवर रहने दें और कुर्बानी के दिनों में वहीं जा कर ज़ब्ह करें।

दीनी इदारे इन हालात में जहां कुर्बानी की इजाज़त है कुछ दीनी और तिजारती इदारे क़ुर्बानी का नज़्म करते हैं, वह जानवरों की लाट खरीद लेते हैं और एलान कर देते हैं कि हमारे यहां कुर्बानी का हिस्सा इतने में मिलेगा, लोग वहां हिस्सा ख़रीद कर उन्हीं के इन्तिज़ाम में कुर्बानी करते हैं।

कई साल हुए एक जगह एलान हुआ कि हमारे यहां 650 रूपयों का हिस्सा है, मैंने वहां जा कर एक हिस्सा खरीदा और मालूम किया कि किस रोज़ ज़ब्ह करेंगे ताकि मैं आकर गोश्त ले लूं, 11 जिलहिज्जा को दस बजे मुझे बुलाया गया, मैं 11 बजे गया जिम्मेदार ने अपने एक आदमी को बुलाया और उससे कहा साढ़े छे का इनका एक हिस्सा ला दो, वह आदमी मेरा झोला लेकर गया और तकरीबन चार किलो गोश्त ला कर मेरे हवाले कर दिया, मुझे कुछ भी पूछने की हिम्मत न हुई, कि गोश्त कैसे तक़्सीम किया, खाल का क्या हुआ? बस हुस्ने ज़न से काम लिया और गोश्त ले कर चला आया।

अगले साल मैंने कुछ अजीज़ों को मिला कर अपने इलाक़े के एक नदवी आलिम के गांव में जहां पड़वे की क़ुर्बानी होती है पड़वा खरीदा और जाकर पड़वा देख कर अपने सामने ज़ब्ह कराया, फिर आम तौर से वहीं क़ुर्बानी करता रहा। वहां जब्ह का नज्म होता है बीते साल उनमें से एक जगह जा कर वहां हिस्से की बात की तो उन्होंने बताया कि एक हिस्सा 1400 रूपये का है, मैंने कहा फुलां जगह तो 900 रूपये पर हिस्से का एलान है, जवाब दिया वहीं चले जाएये और उदंत ज़ब्ह करके सवा[illegible] लीजिये, वहां गया वहां देखा लगभग 100 पड़वे एक घेरे में पुवाल चबा रहे हैं, मुझे पिछले की बात सही मालूम हुई मैंने ज़िम्मेदार से कहा मुझे तो

शेष पृष्ठ ....24.. पर

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों की जंगों के दरमियान मुआज़ना (तुलना)—

मुसलमानों की जंगों को मुसलमानों का ज़ालिमाना अमल कहने वालों के सामने यह हक़ीकत वाज़ेह (स्पष्ट) करने की है कि तमाम जंगों में जो इंसानी रवादारी और अच्छे अख़लाक का मामला रहा उसका दूसरे मज़हबों और समाजों के दरमियान होने वाली जंगों में पेश आने वाले हालात से मुकाबला किया जाए तो हैरतनाक नमूना सामने आता है, इस्लाम के अलावा कोई भी मज़हब, कोई भी क़ौम, कोई भी समाज व सोसाइटी और अमन के लिए काम करने वाली कोई संस्था आज तक इस तरह का अमन पसंद और हक़तलबी का इन्किलाब अमल में नहीं ला सकी और यह इन्किलाब भी ऐसा इंसानी इन्किलाब था कि उसके नतीजे में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसे निज़ाम (प्रबंध) की बुनियाद रख दी जिसकी बरकतें सदियाँ गुज़र जाने के बाद भी इंसानी सीनों में महसूस की जा सकती हैं।

जंग बदर के 72 क़ैदियों में से 70 को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुर्माना लेकर आज़ाद कर दिया, उन क़ैदियों को मेहमानों की तरह रखा गया। बहुत से क़ैदियों का ऐतराफ (स्वीकृति) मौजूद है कि मुसलमान अपने बच्चों से बढ़ कर उनके आराम व राहत का इन्तिज़ाम करते थे।

जंग बदर के बाद ग़ज़्व—ए—मुसतलिक़ में 100 से ज़ाएद मर्द औरत क़ैद हुए वह सब बिला किसी मुआवज़े के आज़ाद कर दिये गए। हुदैबिया के मैदान में 80 हमलावर गिरफ़्तार हुए उनको आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बिला शर्त व बिला किसी जुर्माने के आज़ाद कर दिया।

जंग हुनैन में 6 हज़ार मर्द और औरत बिला किसी शर्त व बिला किसी मुआवज़े के आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आज़ाद फरमा दिये। कुछ क़ैदियों की आज़ादी का मुआवज़ा हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी तरफ से क़ैद करने वालों को अदा किया था और फिर ज़्यादातर क़ैदियों को खलअत व ईनाम दे कर रुख़्सत किया।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का काएदा था कि औरत, बच्चों और बूढ़ों को क़त्ल करने से मना फरमाते थे, जब सरीया (सैन्य दल) भेजते तो उन लोगों को चेतावनी देते कि खुदा का इन्कार करने वालों का क़त्ल करना हो तो मुसला न करो, यानी उनके शरीर के अंगों को न बिगाड़ो, कुफ़्फ़ार से जब कुछ मुआहिदा करो तो बदअहदी न करो। औरत, बच्चे और बूढ़ों को क़त्ल न करो, जिस बस्ती और क़बीले से

अज़ान की आवाज़ सुनी जाए या इस्लाम की कोई अलामत (पहचान) मालूम हो वहां हमला करने की इजाज़त न थी और जो शख़्स कलमा पढ़ लेता अगरचे उसने तलवार के खौफ से ही पढ़ा हो तो उसको क़त्ल करने से मना फ़रमाते थे। सहाबा कहते थे कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसने मौत के डर से कलिमा पढ़ा था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते थे क्या तुमने उसका दिल चीर कर देख लिया था? हज़रत उसामा बिन ज़ैद और मुहलिम बिन जसामा पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी बिना पर नाराज़ हुए और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसामा बिन ज़ैद से वादा लिया कि मेरे सामने या मेरे बाद कभी किसी ऐसे दुश्मन शख़्स को क़त्ल न करना जो कलिमा पढ़ ले। हज़रत ख़ालिद रज़ि0 से इस बारे में बदऐहतियाती हो गई तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनसे सख़्त नाराज़ हुए[1]।

सीरत इब्न कसीर में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ग़ज़्व–ए–हुनैन में अपने असहाब और साथियों को हुक्म दिया कि किसी बच्चे, औरत मर्द या गुलाम जो काम काज के लिए हो हाथ न उठाया जाए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक औरत को क़त्ल पर जो हुनैन में मारी गयी, अफसोस का इज़हार किया[2]।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस आलातरीन तालीम व तरबियत ही का असर था कि खुलफाऐ राशिदीन के ज़माने में अगरचे ईराक, शाम, मिस्र व अरब ईरान व खुरासान के सैकड़ों शहर फतह किये गए, मगर किसी भी जगह हमलावरों, जंगआज़माओं या रिआया के साथ इस तरह की सख़्ती और ज़्यादती का बरताव नहीं मिलता जो उस ज़माने की जंगों में राएज था। हारे हु दुश्मन से तावाने जंग लेने का भी कहीं इन्दिराज नहीं मिलता।

1. अहदुस्सियर 345–346
2. सीरत इब्ने कसीर 3/638

ज़रा एक तरफ इस्लाम की उन जंगों के हालात वाली क़ौमों की तारीख मुलाहिज़ा करें तो ज़मीन व आसमान का फर्क़ मालूम होगा।

फ्रांस में अवामी इन्क़िलाब आया और जब अलग अलग इंसानों का मारना वहां मुमकिन न रहा तो ग्लोटीं ईजाद करनी पड़ी जो एक साथ बीसों इंसानों के सरों को नारियलों की तरह उड़ा देती थीं। इस अवामी इन्किलाब में इतिहासकारों के अंदाज़े के मुताबिक 26 लाख इंसानों को ग्लोटों की भेंट चढ़ा दिया। इसी तरह रूम में साम्यवादी इन्किलाब में एक करोड़ से ज़ायद इंसानों को कत्ल व ग़ारतगरी और बर्फानी क़ैदखानों के हवाले कर दिया।

1914 ई0 के महान भयंकर युद्ध में यूरोपी देशों ने जर्मनी से अपने इलाकों की आज़ादी के लिए क़त्ल व ग़ारतगरी का बाज़ार गर्म किया। उसमें रूस के 17 लाख, फ्रांस के 13 लाख 70 हज़ार, इटली के 4 लाख 20 हज़ार, आस्ट्रेलिया के 8 लाख, बरतानिया के 7 लाख 20 हज़ार, बल्ग़ारिया के 1

लाख, रूमानिया के एक लाख, आस्टरया के एक लाख, तुर्की के 2 लाख 5 हज़ार, बैल्जियम के एक लाख 2 हज़ार, सर्वोमानटीनेगरे के 1 लाख और अमरीका के 50 हज़ार इंसान कत्ल हुए। सामूहिक संख्या 73 लाख 38 हज़ार बनती है। यह जंग चार साल चली। वास्तव में 73 लाख से अधिक लोग मारे गये। दूसरी तरफ इस्लाम की 8 साला जंगों का नक्शा देखिए तो नज़र आयेगा कि उनमें से एक हज़ार से कुछ ज़्यादा लोग उसमें काम आए, जिनमें मुसलमान और दुश्मन के अफराद शामिल हैं। फिर भी नबी–ए–इस्लाम और इस्लाम पर जुल्म का इल्ज़ाम लगाते हैं जिन्होंने लाखों इंसानों को सिर्फ ग़ैर इलाके पर कब्ज़ा या अपने इलाके से दुश्मन को हटाने के लिए मौत की भेंट चढ़ा दिया। पिछली सदी की पहली जंग में जो 1914 ई0 में हुई और उसी सदी की दूसरी जंग में जो 1938 ई0 से 1942 ई0 तक रही ताकत के नशे में मस्त विश्व शक्तियों ने इलाक़े पर कब्ज़ा जमाने के लिए अरबों पौण्ड और डालर का माली नुक़सान किया और इसमें बहुत से देशों के इंसान जो सफहे हस्ती से मिट गए उनकी सबकी सामूहिक संख्या एक करोड़ छः लाख बनती है। माली तौर पर सिर्फ अमरीका का 350 अरब डालर खर्च हुआ, जब कि एक करोड़ से ज़ाएद शाही घरों से बे घर हो गए, लाखों इन्सान माजूर हो गए और लाखों बच्चे ऐटमी जरासीम के असरात (प्रभाव) की वजह से माजूर ही पैदा हो रहे हैं। फिर मजीद यह कि आमने सामने की जंग तो बहादुरी की जंग समझी जाती है मगर अमरीका ने इस महान युद्ध द्वितीय में बग़ैर मुकाबले के हिरोशिमा और नागासाकी की शान्तिपूर्ण अबादी पर ऐटम बम गिरा के दो लाख 75 हज़ार इंसानों को क्षण भर में हवा में बिखेर दिया। 12 हज़ार वज़नी बम शहरी आबादियों पर बरसाए गए, जिनकी वजह से तापमान पांच लाख डिग्री फारनहाईट से ज़्यादा हो गया। ऐसे में इन्सानियत का क्या हाल हुआ होगा। इसके बाद भी मार धाड़ का सिलसिला जारी रखा।

और यह सब किसी इंसानी भलाई या किसी बुलंद मकसद से नहीं बल्कि सिर्फ इलाके पर ग़ैर का कब्ज़ा हटाने और अपना कब्ज़ा जमाने के लिए किया गया। दूसरी जंग की इन सब हौलनाकियों के बाद जो इलाकाई क़ब्ज़े के लिए जंगें हुई, उनमें 1955 ई0 में कोरियन वॉर में जो अमरीका के कोरिया पर कब्ज़ा करने के सिलसिले में हुई 15 लाख इंसान क़त्ल हुए। 1990 ई0 की गल्फ़ वॉर में जो सुपर पॉवर की सरपरस्ती में लड़ी गई, एक लाख इंसानी जानें खत्म हुई। विश्व सुपर पॉवर रूस की लादी हुई अफगान वॉर में जो 25 दिसम्बर 1979 ई0 से 1999 तक हुई दस लाख से ज़ाएद इंसान मारे गए और करोड़ों डालर का नुकसान हुआ। जबकि लाखों लोगों को अभी तक अपने घर की छत नसीब नहीं हुई।

मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी रहमतुल्लाह अलैहि ने अख़्बार "सिदक जदीद" (19 जून 1931 ई0) में बरतानिया और जर्मन फ़ौजों के तर्ज़अमल (कार्यप्रणाली)

के जो खुंरेज़ी और सफ़्फ़ाकी की जो अजीब व ग़रीब मिसालें पेश करती हैं खुद उनके जरनल के हवाले से कुछ टुकड़े लिए हैं जो देखने के लिए पेशे खिदमत हैं:–

"बरतानिया के फ़ौजी अफ़सरों की निगाह में अपने सिपाहियों की अहमीयत सिर्फ "तोप की ग़िज़ा" की है (लेख जनरल एलिट डी, एस0आ0 आस्ट्रेलिया)"।

यह अलफ़ाज़ बरतानिया के किसी दुश्मन के नहीं, एक दोस्त के किसी हरीफ़ के नहीं, एक हलीफ की ज़बान से अभी कुछ ही अर्सा हुआ अदा हुए हैं।

बरतानिया ही के एक लायक बेटे ने फौज के एक नामवर अफसर, बरतानिया के एक दिलावर मिलेट्री कमान्डर ने कच्चा चिट्ठा अपने कलम से छाप कर पब्लिश कर दिया।

किताब "जगबीती" नहीं "आप बीती" है सुनी हुई बातें नहीं हैं देखी हुई बातों का मजमुआ (संकलन) है।

किताब का लिखने वाला वह नहीं जिसने दूर बैठे सुनी सुनाई कहानी और किस्सों को जमा कर दिया, वह है जो खुद उमूमी जंग में शुरु से आखिर तक पहले छोटे अफसर और आखिर में बड़े अफसर की हैसियत से शरीक रहा। पलटनें भरती कीं, खंदकों में लड़ा, मारके सर किये, किले फतह किये, तमग़े पाये, खिताबात से सरफराज़ हुआ, कप्तान था मेजर हुआ और आखिर में ब्रिगेडियर जनरल के ओहदे पर पहुंचा नाम एफ0पी0 ग्रोमेर है, और सी0बी0सी0, एम0जी0 डी0एस0ओ0 के जंगी खिताबात से मुमताज़, किताब का नाम "Brass Nation no man's land" है जो बजाए खुद जंगी मुहावरा है। लंदन के पब्लिशर जो मेथन कप ने पहली बार अप्रैल 1930 ई0 में पब्लिश किया, महीनों और हफ़्तों में नहीं, दिनों में पहला एडीशन ख़त्म था दूसरा एडीशन और फिर तीसरा एडीशन भी ख़त्म थे। उस वक़्त से लेकर अब तक खुदा मालूम कितने एडीशन और निकल चुके हैं, इस आईने को हाथ में लीजिये और उसमें जंगे फिरंग का नक़शा हू ब हू मुलाहिज़ा करते चलिये, लिखते हैं:

"जंग का मक़सद एसकोएथ और ग्रे की ज़बान पर "बुराई का दूर करना" था, टाइम्स और डेलीमेल के सफ़हात में "इस्लाह" (सुधार) और सिर्फ सुधार था, लेकिन खुद सिपाहियों के नाम उनके अफ़सर जो तक़रीरें करते थे, उनका नमूना यह है:–

"अपनी इन्सानियत व शराफत को भुला दो, दिलों को पत्थर बना लो, मौत व ज़िन्दगी की तरफ़ से गूंगे बहरे बन जाओ, यह जंग है जंग" (पेज नं0 40)

"मेरा काम यह है कि एक हज़ार इंसानों से ज़ाएद की ज़ेहनियत, तरबियत, सीरत जल्द से जल्द मुद्दत में बदल कर रख दूं। दस्त ब दस्त लड़ाई के लिए खून का ज़ौक़ मुझे पैदा करना है और प्रोपैगन्डे के ज़हर से दिलों को माऊफ कर देना है, जर्मनों की सफ़्फ़ाकियाँ

---

1. सफ़ा टाइम्स जिल्द नं0 2, शुमारा नं0 5, अप्रैल–जून 2006, पृ0 10–11

(हालांकि मैं दिल ही दिल में बहुत सी रवाएतों को झूठ समझ रहा हूँ) उनका ज़हरीली गैस इस्तेमाल करना, फ्रेंच औरतों की इज़्ज़त लूटना, नर्स केविल का सरकारी क़त्ल, यह सारी चीज़ें उस हैवानियत के नशोनुमा (विकास और उन्नति) में हो रही हैं, जो कामयाबी हासिल करने के लिए ज़रूरी है। बात बात पर और बिला वजह जोश में आने की आदत पैदा करनी है, इसके बग़ैर सही नताएज नहीं निकल सकते। नर्म दिलों और नेक मिज़ाजो सब पर यह ज़हर उतारना है और इसके लिए फ़ौजी गाने, फ़ौजी बाजे सब काम में लाए जा रहे हैं, लतीफ (कोमल) और मज़हबी रागों की मुमानियत है बजुज़ गिरजों के, वहां भी जंगी सुरों की इजाज़त है, गिरजे तो खूंआशामी (रक्तपात) का ज़ौक़ पैदा करने में सबसे बढ़े हुए हैं और हमने उनसे पूरा काम भी लिया''।

(पेज नं0 42–43)

बरतानवी सिपाही से पूरी तरह काम लेने के लिए नफ़रत का ज़हर उसकी रग रग में पूरी तरह उतार दिया जाए। हलाक होने वालों की तादाद उसके सामने दर्द व ताल्लुक के लहजे में नहीं बेतवज्जोही व बेदर्दी के साथ बयान की जाती हैं। मुझे उम्मीद है कि वह ज़माना आने वाला है और अनक़रीब ही, जब सिपाहियों के दिल में मौत और सख़्त से सख़्त तड़पा देने वाले जख़्मों और गैसज़दा आज़ाए जिस्म की कोई अहमियत ही न रह जायेगी बल्कि आपस में हँस हँस कर उन चीज़ों का ज़िक्र करते रहेंगे और खुश व मुतमईन इस पर रहेंगे कि जितना अपना नुकसन हुआ है उससे कहीं ज़्यादा दूसरों के जिस्म चीर फाड़ चुके हैं, दूसरों के हाथ पैर तोड़ चुके हैं। सितम्बर 15 ई0 तक यह हालत हो गई थी जो कुछ भी हम कर रहे हैं सब बजा और दुरुस्त है और जर्मनी जो कुछ कर रहा है, सब नफरत अंगेज़ है, जंग में इसके सिवा मफ़र नहीं, और दोनों फरीक़ इसी पर अमल कर रहे हैं।'' (पेज नं0 43–44)

''जिस तरह रेल के डिब्बे को ठन्डा और गर्म दोनों रखा जाता है उसी तरह इस वक्त तक मैं भी अपने जज़बात और अपने एहसासात को पूरे तौर पर काबू और कब्ज़े में ले आया हूं। खूंरेज़ी के वक्त खूब गरमा गरम हूँ। जंगी उपाय के समय बिल्कुल सर्द, और सैर तफरीह के वक्त नीम गर्म, इस वक्त तक मैं रंग बदलने में कामिल व माहिर हो चुका हूँ और तमामतर एक पैदावार जंग बन कर रह गया हूँ''।

(पेज नं0–92)

''लश्करी ग़रीब इतनी ज़ेहानत कहां से ला सकते हैं, वह जो कुछ सुनते हैं उसे मान भी लेते हैं। उनसे जो कुछ कहा गया है, उसका वह यक़ीन भी कर चुके हैं, उनकी ज़बान और दिल एक है वह पूरी तरह उसके क़ायल और मोतक़िद हैं, कि उनका काम मरना और मारना, कटना और काटना है वह अपने लिए भी यही समझते हैं और अपने हरीफ के लिए भी।'' (पेज नं0–23)

"मुर्दों की तरफ कोई रुख़ भी नहीं करता, जंग में आखिर लाशें किस काम आ सकती हैं? अगर किस्मत साथ दे गई तो ख़ैर, बाद को इतमीनान होने पर कहीं दफना दिये जायेंगे, जख़्मी घिसल घिसल कर अपने को सिपाही रेखा तक लाने की कोशिश में हैं, कितने ऐसे हैं जो इसी हाल में फिर गोली खाते हैं, लेकिन ज़्यादा तर तो वही हैं जो दिन भर बेबस व बेकस काँटे पड़े हुए हुलकूमों के साथ चिलचिलाती धूप में इंतिहाई तक़लीफ की हालत में पड़े लोटते रहेंगे मेरा असली फर्ज़ मन्सबी जंग को संभालना न कि ज़ख़्मियों की देख भाल करना।"

(पेज नं0 106)

सफेद चमड़े के मोहज़्ज़बों का बेनकाब चेहरा आपने देखा! नकाब हटने से पहले आप तसव्वुर भी कर सकते थे कि उसके अन्दर जो चेहरा है वह इतना करीह, इतना बदमंज़र इतना हैबतनाक होगा? ज़ाहिर के उजाले से बातिन की तारीकयों का आप ख़्याल भी कर सकते हैं? "जिहाद" के एक दो नहीं दस, बीस, सौ, पचास जितने वाक़िआत चाहिए गिन कर एक तरफ रखिए और दूसरे पल्ले में सिर्फ एक जंगे उमूमी और फिर अक़ीदे को नहीं, इल्म को, नकल को नहीं, अक़्ल कोहुक्म लगाने दीजिए, कि शराफत, तहज़ीब, इन्सानियत किसकी दौड़ दौड़ कर बलायें लेती हैं। शक़ावत, क़सावत, दरिन्दगी, क़त्ल व ग़ारत, कुश्त व खून, संगदिली और बेदर्दी के मनज़रों से तबीअत उकता चली हो तो परदा उलट कर देखिये, रज़्म में बज़्म के सामान और गरजती हुई तोपों के साए में मय व शाहिद के जलवों की भी कमी नहीं! ख़्याल होता होगा कि गोलियों की बौछार, संगीनों की झंकार, तोपों की गरज, कराहते हुए ज़ख़मियों की आह व फरियाद, सड़े हुए जिस्मों की उफूनत, और तड़पती हुई लाशों की भयानक फ़िज़ा के दरमियान ऐश व इशरत की फुरसत, और रंग रेलियां मनाने की फ़रागत किसे? लेकिन एक़बाले फिरंग हर नामुमकिन को मुमकिन कर दिखाता है वह एक ही वक़्त में तारीख़ का चंगेज़ भी हो सकता है और अफ़साने का राजा इन्द्र भी"[1]।

भारतीय इतिहासकार प्रोफेसर अमरेश मिश्रा अपनी ताज़ा तहक़ीकी किताब "War of Civilization India The Road To Delhi A.D. 1857" में तारीख़ी शहादत व दस्तावेज़ात और सरकारी आकड़ों की बुनियाद पर लिखा है कि "अंग्रेज़ों ने 1857 ई0 में 10 मिलियन (एक करोड़) हिन्दुस्तानियों को मौत के घाट उतार दिया और यह सबके सब बेगुनाह थे, उनका जुर्म यह था कि उन्होंने मुल्क की आज़ादी की खातिर बरतानवी साम्राज्य के जुल्म व तशद्दुद के खिलाफ तहरीक शुरु की थी लेकिन सफ्फ़ाक अंग्रेज़ों ने अपने इक़तिदार (सत्ता) की हिफ़ाज़त की बक़ा की ख़ातिर बेगुनाह हिन्दुस्तानियों (हिन्दू व मुसलमानों) को बेरहमी से क़त्ल कर दिया और यह खूनी सिलसिला 1857 से 1867 तक जारी रहा"।

---

1. प्राप्त "सच" 19 जून 1931 ई0

शेष पृष्ठ ....22... पर

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

मुसलमानों के त्योहार

दो बड़े त्योहार—

मुसलमानों के दो बड़े त्योहार ईदुल—फ़ित्र और ईदुल—अज़हा हैं, जिनको ईद व बकर ईद के नाम से याद किया जाता है। ईद रमज़ान[1] के महीने के अन्त और शव्वाल[2] के चाँद दिखाई देने पर शव्वाल की पहली तारीख को होती है। चूंकि रमज़ान का महीना रोज़े का महीना है, और वह धैर्य तथा संयम, उपासना तथा धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्रियाओं में व्यस्त रहने में बीतता है अतः स्वाभाविक रूप से ईद के चाँद की बड़ी प्रतीक्षा होती है। विशेषकर उन्तीसवीं के चाँद की अधिक प्रसन्नता होती है। उर्दू में वाक्य "ईद का चाँद" और "उन्तीसवीं का चाँद" प्रसन्नता एवं आनन्द हेतु लोक उक्ति बन गये हैं रमज़ान की उन्तीस तारीख को सूर्यास्त होने के समय मुसलमानों की निगाहें आसमान की ओर होती हैं, और प्रत्येक आयु एवं वर्ग के लोग चाँद की खोज में व्यस्त होते हैं, उन्तीसवीं को चाँद दिखाई नहीं देता तो अगले दिन फिर रोज़ा रखा जाता है और तीस का चाँद निश्चित रूप से हो जाता है। जैसे ही चांद पर दृष्टि पड़ती है, चारों ओर मुबारक, सलामत की पुकार होने लगती है। छोटे बड़ों को सलाम करते हैं, बच्चे खानदान के बुजुर्गों तथा महिलाओं को ईद का शुभ सन्देश सुनाते हैं और उनका आशीर्वाद लेते हैं, जो लोग पढ़े लिखे हैं और सुन्नत के अनुसार कर्म करने का प्रयत्न करते हैं, वह चाँद देख कर अग्रलिखित दुआ पढ़ते हैं:—

ऐ चाँद मेरा और तेरा मालिक अल्लाह है, तू हिदायत और भलाई का चाँद है। ऐ अल्लाह! इस महीने को हमारे ऊपर शान्ति एवं ईमान, सलामती तथा आज्ञा पालन और अपनी प्रसन्नता प्राप्ति की क्षमता के साथ आरम्भ फ़रमा।

ईद का स्वागत तथा उस दिन के आचार व्यवहार—

कई दिन पहले से ईद की तैयारी आरम्भ हो जाती है, परन्तु ईद की रात[3] में बड़ी हमा हमी और बाज़ारों तथा घरों में चहल—पहल होती है। प्रातः काल से ही ईद से सम्बन्धित क्रियायें आरम्भ हो जाती हैं। इस तथ्य को व्यक्त करने के लिए आज रोज़ा नहीं है और खुदा ने 29 या 30 दिन के प्रतिकूल आज दिन के किसी भाग में खाने पीने की अनुमति प्रदान कर दी है,

---

1. इस्लामी कलेण्डर के हिसाब से बारह महीने क्रमशः निम्न प्रकार हैं— (1) मुहर्रम, (2) सफ़र (3) रबी—उल—अव्वल (4) रबी—उस्सानी (5) जमादिल—ऊला (6) जमादिल—आखिर (7) रजब (8) शाबान (9) रमजान (10) शव्वाल (11) ज़ी—क़ादा (12) ज़िल—हिज अनु0
2. सूर्य अस्त के पश्चात जैसे ही अति महीन आकृति का मास का नया चन्द्रमा दिखाई देता है, वैसे ही नया मास आरम्भ हो जाता है और पूर्व मास की आखिरी तारीख का अन्त हो जाता है (अनु0)
3. ईद के दिन के पूर्व की रात।

सुबह ही सुबह क्षमतानुसार खजूर या किसी मीठी वस्तु से सत्कार किया जाता है। फिर स्नान भली प्रकार करना आरम्भ होता है। खुदा ने जिनको दिया है, वह उस दिन नया जोड़ा पहनना जरूरी समझते हैं। नहा धो कर, कपड़े पहनकर, इत्र या खुशबू लगाकर, लोग ईदगाह की ओर चल देते हैं। ईदगाह जाने के पूर्व ग़रीबों के लिए दान हेतु कुछ अनाज अथवा नक़द के रूप में निकालते हैं, जिसको "सदक़–ए–फित्र"[1] कहते हैं, यह मानो रमजान के रोज़ों के प्रति कृतज्ञता का प्रदर्शन है। यदि गेहूँ के रूप में हो तो एक व्यक्ति को पौने दो सेर गेहूं और जौ हो तो उसका दुगुना अथवा उसका मूल्य भी अदा किया जा सकता है, जो अनाज के भाव के अनुसार घटता बढ़ता रहता है। यह सदक़ा अथवा दान बालिग़ों के अतिरिक्त बच्चों की ओर से भी अदा किया जाता है।

1. रोज़े की प्रक्रिया के पूर्णरूप तथा सुगमता पूर्वक सम्पन्न हो जाने के उपलक्ष में दिया जाने वाला दान।

ईद की नमाज़ सूर्य चढ़ने के बाद अदा करना सुन्नत है, और इसमें जितनी जल्दी हो उतना ही अच्छा है। परन्तु ईद से सम्बन्धित स्वयं रचित अनेक बखेड़ों के कारण हिन्दुस्तान में इसको देर से पढ़ने का आम रिवाज हो गया है। फिर भी दस से लेकर ग्यारह बजे दिन तक सामान्यतः ईद की नमाज़ पढ़ ली जाती है। ईद की नमाज़ पढ़ने का उचित स्थान तो नगर से बाहर मैदान या ईदगाह थी, परन्तु अब सुविधा हेतु, जनसंख्या की अधिकता और नगरों के विस्तृत होने के कारण मुहल्लों की मस्जिदों में भी ईद की नमाज़ पढ़ने का रिवाज़ बढ़ गया है। फिर भी अधिक संख्या में लोग नगर की ईदगाह में नमाज़ पढ़ते हैं।

ईद की नमाज़–

मुसलमान ईद की नमाज़ पढ़ने जब जाते हैं तो मार्ग में खुदा का गुणगान तथा कृतज्ञता के शब्दों का मन्द स्वर में उच्चारण करते हुए जाते हैं। मसनून यह है कि एक मार्ग से ईदगाह जाये और दूसरे मार्ग से वापस आए, ताकि दोनों ओर खुदा की बड़ाई और मुसलमानों की उपासना के प्रति अभिरुचि तथा एकत्व महिमा का प्रदर्शन हो जाये[1]। परन्तु अब अधिक दूरी तथा सभ्यता एवं सांस्कृतिक उन्नति के फलस्वरूप सामान्यता सवारियां प्रयोग की जाती हैं और दो मार्गों वाली बात क़रीब क़रीब समाप्त हो गई है।

प्रति दिन पाँच समय की नमाज़ों तथा जुमा की नमाज़ के प्रतिकूल दोनों ईदों की नमाज़ों में न अज़ान है, न इकामत न कोई सुन्नत न नफ़िल है। जैसे ही मुसलमान एकत्र होते हैं या नमाज का पूर्व निश्चित समय आ जाता है, इमाम आगे बढ़ता है और नमाज़ आरम्भ कर देता है। पाँचों वक्त की दो रकअत[2] नमाज़ों में 11 तक़बीरें[3] कही जाती हैं।

1. इससे यह लाभ भी है कि भीड़ भाड़ में कमी हो जाती है।
2. नमाज़ में खड़े होने, एक रुकू तथा दो सजदों की क्रियाओं से मिलकर एक रकअत होती है। अनु0
3. एक बार "अल्लाहु अकबर" कहना एक तकबीर हुई अनु0।

शेष पृष्ठ...........17.. पर

ईमान बाकी रखने के लिए दीनी मक्तबों की ज़रूरत

—मौलाना सैय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

इस वक्त दुन्या तरक्की की राह पर जिस तेजी से चल रही है चाहे वह इल्मी तरक्की हो या माद्दी (भौतिक) तरक्की लेकिन इस मुकाबला और तरक्की के दौर में (उन्नति काल में) हमारी मिल्लते इस्लामिया ने जो पहले हर क़ौम से आगे रहती थी अब सुस्त रवी (मन्दगति) को अपना शिआ़र (चिन्ह) बना लिया है, जब कि इस वक्त मिल्लते इस्लामिया को हजारों चैलंजों का सामना है। अकीदे के महाज पर भी और माद्दी महाज पर भी। लेकिन हमारा हाल यह है कि न हम अकीदे को मजबूत और महफूज़ (दृढ तथा सुरक्षित) करने की फिक्र में हैं और न माद्दी चैलन्जों का सामना करने को, बल्कि हमारी अक्सरीयत तो इन खतरों और चैलंजों से आशना (अवगत) भी नहीं है।

इस वक्त सबसे बड़ा महाज (युद्ध केन्द्र) यह है कि हमारी मौजूदा और आइन्दा नस्ल मुसलमान रह जाए, न सिर्फ एतकादी इरतिदाद (विश्वास विरोध) से, बल्कि जहनी, फिक्री और तहजीबी इरतिदाद (मानसिक तथा सांस्कृतिक पथ भ्रष्टता) से महफूज रहे, इस राह में सबसे बड़ी जिम्मेदारी उलमा की है वह अपने को इस खतरे के मुकाबले के लिए तैयार करें और जिस तरह असलाफे किराम (महापुरुषों) ने कुर्बानियां दी हैं, उनके नक्शे कदम (पद चिन्हों) पर चलते हुए दुन्यावी ऐश व आराम (भोग विलाश) से सर्फे नज़र करके इस महाजे जंग (युद्ध केन्द्र) पर कदम जमाएं और गाँव—गाँव, शहर—शहर, मुहल्ला मुहल्ला दीनी मकातिब काइम करें उनमें शबीना दरजात (सायंकालिक कक्षाएं) भी हों ताकि अस्री स्कूलों में तालीम हासिल करने वाले बच्चे अपने शाम के वक्त में इन कक्षाओं में दीनी शिक्षा प्राप्त कर सकें और आधुनिक स्कूलों में जो ज़ह्र (विष) उनके दिल व दिमाग़ में भरा जा रहा है, उसका तिरयाक़ (उतार) उनको मिल सके।

दूसरी जिम्मेदारी हमारी माँ बहनों की है कि वह इस बात की फिक्र रखें कि उनकी औलाद (संतान) कहीं इस्लाम से दूर तो नहीं हो रही है! कहीं उनमें अक़ीदे का बिगाड़ तो नहीं पैदा हो रहा है! कहीं उनके दिल व दिमाग़ में कुफ्र व शिर्क का ज़ह्र तो सरायत (प्रविष्ट) नहीं कर रहा है! हम अपने बच्चों की एक एक बात की फिक्र रखते हैं अगर बच्चे को चोट लग जाये तो फौरन डाक्टर के पास ले जाते हैं और इन्जेक्शन लगवाते हैं कि कहीं जह्र न फैल जाए उसका पूरा इलाज कराते हैं लेकिन इसकी फिक्र नहीं करते कि अकीदे की खराबी का जो ज़ह्र उसके दिल व दिमाग़ में फैल रहा है उसका इलाज किया जाए। बल्कि उसकी तरफ से बिलकुल अंजान बन जाते हैं, आख़िर उसका अंजाम क्या होगा? हम अपने दिल पर हाथ रख

कर सोचें कि क्या यह जान बूझ कर अपने बच्चे को दोज़ख की आग में फेंकना नहीं है?

आइय! आज हम इस बात का अहद (प्रण) करें कि इस अहम महाज (युद्ध सीमा) पर सीना सिपर रहेंगे और अक़ीदा और ईमान की सलामती के लिए हर किस्म की कुर्बानी देंगे, फिर अल्लाह तआला हमारी मदद करेगा और हमारी आइन्दा नस्लें और हमारे जिगर के टुकड़े इन्शा अल्लाह ईमान के साथ ज़िन्दा रहेंगे अल्लाह और उसके रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत और महब्बत के साथ ज़िन्दा रहेंगे अल्लाह तआला तौफीक से नवाजे आमीन! ❑❑

अनुरोध

"सच्चा राही" के ख़रीदार बना कर दीन फैलाने में सहयोग दें।

सम्पादक

प्यारे नबी की..........

ने पालान पर हज किया और वह आपकी बार बर्दारी का ऊँट था, यानी आपने ऐसे ऊँट पर जिस पर ज़ीन की जगह पालान था हज किया (बुखारी)

हज में तिजारत–

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि उकाज़, मजिनह और जुलमज़ाज जाहिलीयत के बाजार थे (इन जगहों में मेले के तौर पर बाजार लगाया करते थे) तो सहाब–ए–किराम ने हज के मौसम में तिजारत को गुनाह समझा, उस वक्त यह आयत नाज़िल हुई, अनुवादः तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम (हज के दिनों में) अपने रब से रिज़्क चाहो (बुखारी)

❑❑

हिन्दुस्तानी मुसलमान..........

हैं, परन्तु दोनों ईदों (ईदुल फ़ित्र, ईदुल–अज़हा) की नमाज़ में हनफ़ीया[3] के यहां हर रकअत में तीन तकबीरें ज़ाइद हैं, सलाम फेरने के बाद तुरन्त इमाम मिम्बर[4] पर चला जाता है और ईद का खुत्बा (ईद से सम्बन्धित परम्परागत भाषण) देता है, जो जुमा के खुत्बा के समान दो खण्डों में विभाजित है। एक खुत्बा (प्रथम खण्ड) दे कर कुछ सेकण्ड के लिए वह बैठ जाता है, फिर खड़ा होता है और दूसरा खुत्बा देता है। जुमा में पहले खुत्बा है फिर नमाज़, ईद में प्रथम नमाज़ फिर खुत्बा। हिन्दुस्तान में सामान्यतः अरबी भाषा में खुत्बा पढ़ने का रिवाज है। प्रायः इमाम खुत्बा की किताब लेकर खुत्बा पढ़ते हैं। अब अनेक स्थानों पर (कम से कम ईद के एक खुत्बा का) उर्दू अथवा क्षेत्रीय भाषा में खुत्बा देने का रिवाज़ हो गया है। इसमें ईद की वास्तविकता, उसका सन्देश, ईद से सम्बन्धित आदेश एवं निर्देश और समय की मांगों पर प्रकाश डाला जाता है।

---

1. नमाज़ आरम्भ करने पर पहली तकबीर को तकबीर तहरीमा कहते हैं अनु0
2. दोनों हाथ दोनों घुटनों पर रखकर झुकना इस प्रकार की सिर तथा पीठ समतल रहे और टांगों से समकोण बनाने की दशा मे हो अनु0
3. फ़िक़ह के अनुसार चार धर्म शास्त्रों (हनफ़ी, शाफ़ई, मालिकी, हंबली) में से एक प्रकार के धर्म शास्त्र के अनुयायी अनु0
4. मस्जिद में मेहराब के निकट व्याख्यान देने हेतु एक उच्च स्थान अनु0 ❑❑

मानवता का स्तर (एक तक़रीर)

—मौ0 सय्यद अबुल हसन अली नदवी

मित्रो तथा भाइयो!

सब जानते हैं कि हमारे समाज और वर्तमान जीवन व्यवस्था में कोई त्रुटि एवं कमी अवश्य है जिसके कारण जीवन की कल सही नहीं बैठती और उसका झोल दूर नहीं होता। एक खराबी को दूर कीजिये तो चार ख़राबियां और पैदा हो जाती हैं। आज संसार के बड़े—बड़े देश भी इस त्रुटि के अपवादक हैं और अनुभूत करने लगे हैं कि आधार में कोई त्रुटि है, किन्तु उनको अपनी फुटकर समस्याओं से छुट्टी नहीं। हम इन समस्याओं की आवश्यकताओं से इन्कार नहीं करते, मगर इन समस्त समस्याओं से अधिक महत्वपूर्ण तथा सर्वमान्य प्रश्न मनवता एवं मनुष्यता की समस्या है। इसलिए कि हमारी पहली स्थिति इन्सान ही की है और यह समस्त विषय उसके पश्चात आते हैं। जिन लोगों के हाथों में ज़िन्दगी की बागडोर है उन्होंने जीवन की गाड़ी इतनी तीव्र गति से चला रखी है कि एक मिनट के लिए उसको रोक कर त्रुटि एवं दोष को देखने के लिए भी तैयार नहीं। वह यह नहीं देखते कि गाड़ी ठीक पटरी पर जा रही है या नहीं और इस दोष से उसके यात्रियों तथा भविष्य में आने वाली पीढ़ियों तथा सन्तानों को किन भयंकर आशंकाओं तथा आपत्तियों का सामना करना है। उनको केवल इस बात की चिन्ता है कि इस गाड़ी को चलाने वाले वह हों। उनमें से प्रत्येक, संसार को इस बात की रिशवत देता है कि यदि गाड़ी का हैण्डिल उसके हाथ में होगा तो वह अधिक से अधिक तीव्र गति से गाड़ी चलायेगा। अमेरिका तथा रूस दोनों ही का दावा है कि वह इस गाड़ी को अत्यधिक तीव्र गति से चलायेंगे परन्तु किसी को भी इस यात्रा की दिशा और उद्देश्य से कोई बहस नहीं।

सामाजिकता की प्रवृत्ति-

अब मैं बतलाता हूँ कि वह त्रुति कहां और कैसे हो रही है। आज संसार में बड़े—बड़े संगठन हो रहे हैं। इस समय समाजिकता पर अधिक बल दिया जा रहा है। हर काम सामूहिक तथा विश्वव्यापी स्तर पर किया जा रहा है। यह सामाजिकता एक रुचिकर एवं प्रगतिवादी विचारधारा है, परन्तु व्यक्ति तथा उसकी योग्यता एवं क्षमता हर सामूहिक कार्य की और प्रत्येक संगठन की आधारशिला है और इसके महत्व से किसी भी युग में इन्कार नहीं किया जा सकता। इस युग का भयंकर दोष यह है कि व्यक्ति के महत्व तथा उसके आचरण एवं योग्यता की नितान्त उपेक्षा की जा रही है। भवन निर्माण हो रहा है किन्तु जिन ईटों से वह बनेगा उनको कोई नहीं देखता। यदि कोई इस प्रश्न को छेड़ता है कि ईटें कैसे हैं, तो कहा जाता है कि ईटें दोष युक्त, अपूर्ण

तथा क्षीण भले हों किन्तु भवन सुदृढ़ एवं उत्तम होगा। मेरी समझ में नहीं आता कि सौ दोष युक्त वस्तुओं से एक उत्तम वस्तु कैसे तैयार हो जाएगी। क्या अनेक दोष जब बड़ी संख्या में एकत्र हो कर एक दूसरे में समन्वित हो जाते हैं तो चमत्कार के रूप में एक सुन्दर एवं उत्तम वस्तु प्रकट हो जाती है? क्या सौ अपराधियों एवं अत्याचारियों के संगठित हो जाने से एक न्याय युक्त दल तथा एक भद्र एवं शीलवान संस्था की स्थापना सम्भव है? हमें तो यह ज्ञात है कि परिणाम सदैव प्राथमिक ज्ञान तथा मौलिक विचारों के अधीन होता है और पूर्ण सदा अंशों की विशेषताओं की प्रतिमा एवं प्रदर्शन मात्र होता है। आप यथोचित योगफल ज्ञात करना चाहते हैं तो जब तक आंकड़े शुद्ध न होंगे, प्रतिफल अशुद्ध रहेगा। यह कहां का तर्क एवं कहां का दर्शन है कि व्यक्तियों के निर्माण की कोई चिन्ता नहीं और एक सुन्दर एवं शोभनीय संग्रह एवं संगठन की आशाएं की जा रही हैं?

दोषमुक्त असावधानी-

आज विद्यालयों, अनुसंधान –शालाओं, प्रयोगशालाओं, क्रीड़ा स्थलों में मानव जीवन की प्रत्येक वास्तविक तथा कल्पित आवश्यकताओं की व्यवस्था की जा रही है किन्तु उन व्यक्तियों को बनाने के प्रबन्ध के प्रति कोई विचार नहीं किया जा रहा है, जिनके लिए यह समस्त प्रयोजन हैं। क्या यह सब तैयारियां उन मनुष्यों के लिए हैं, जो साँप बिच्छू बन कर जीवन व्यतीत करेंगे, जिनका उद्देश्य भोग विलास, लोलुपता एवं आमोद प्रमोद के सिवा कुछ नहीं? इस युग के मानव ने जुल्म, अत्याचार एवं भ्रष्टाचार को संगठित किया है और इस विषय में उसने पशुओं को भी मात कर दिया है। क्या कभी साँपों तथा बिच्छुओं और जंगल के शेरों तथा भेड़ियों ने इन्सानों पर एकत्र करके संगठित रूप से आक्रमण किया है? लेकिन मनुष्य अपने जैसे मनुष्यों को मिटाने तथा बरबाद करने के लिए संगठनों एवं संस्थाओं को स्थापित करता है और पूर्णरूपेण विश्व से विनष्ट करने के लिए अनेक प्रकार की योजनाएं बनाता है। इस समय व्यक्ति के प्रशिक्षण, चरित्र निर्माण और मानवता के गुणों तथा आचार, व्यवहार पैदा करने की भयंकर एवं दोषयुक्त उपेक्षा की जा रही है, यही काम सबसे निरर्थक एवं व्यर्थ समझा गया है। मशीन ढालने की कितनी फैक्ट्रीयां हैं, कागज़ बनाने के कितने कारखाने हैं, कपड़े की कितनी मिलें हैं, किन्तु वास्तविक मनुष्य बनाने की भी कोई संस्था अथवा प्रशिक्षण केन्द्र हैं? आप कहेंगे कि यह शिक्षण संस्थाएं, विद्यालय तथा विश्व विद्यालय, लेकिन क्षमा कीजिएगा, वहां मानवता का निर्माण तथा मनुष्य को सही अर्थों में मनुष्य बनाने की ओर कितना ध्यान दिया जाता है? यूरोप तथा अमेरिका ने कितने धन व्यय करके और कितनी सामग्री तथा उपकरणों का उपयोग करके ऐटम बम बनाया, यदि इसके स्थान पर वह एक आदर्श पुरुष तैयार करते तो विश्व के लिए कितना मंगलमय एवं कल्याणकारी होता, किन्तु इस ओर ध्यान देने की किस को फुर्सत है।

हमारे प्रमाद का परिणाम

हमारा देश भारत वर्ष इतिहास में, पुरुषोत्पादक देश माना गया है। इस धरती ने अनेक महानुभावों को जन्म दिया है, किन्तु अब शताब्दियों से इसकी ओर से असावधानी बरती जा रही है। हमें कहना पड़ता है कि मुसलमानों ने स्वयं अपने शासन काल में इस कर्तव्य का पालन करने में न्यूनता एवं संकीणता से काम लिया। उनका शासन यदि ख़िलाफ़त राशिदा (हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चार उत्तराधिकारियों का शासन काल) का आदर्श मात्र होता और वह इस देश के व्यवस्थापक एवं शासक होते और इस देश के अभिभावक तथा नैतिकता एवं चरित्र का निर्माण करने वाले होते तो आज इस देश का नैतिक स्तर यह न होता और इस देश के अधिपत्ति एवं शासन से भारयुक्त न किये जाते। फिर अंग्रेज आये। उनका शासन तो केवल स्पंज (SPONGE) के समान जिसका काम यह था कि गंगा के मुख से धन दौलत चूस कर टेम्स (TAMES) के तट पर उगल दे। उनके शासन काल में इस देश का नैतिक पतन कहीं से कहीं पहुँच गया। अब हमें स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। हमें चाहिए था कि हम सर्व प्रथम इस मौलिक एवं आधारभूत समस्या की ओर ध्यान देते! क्या यह देश कभी स्वतन्त्र नहीं था? फिर वह स्वतन्त्रता की माया से क्यों वंचित हो गया? नैतिक पतन तथा नैतिक निर्बलता के कारण! किन्तु खेद है कि मार्गों एवं प्रकाश के प्रति तिजना ध्यान दिया जाता है, उतना भी ध्यान इस मौलिक विषय की ओर नहीं है।

प्रत्येक सुधारात्मक कार्य का आधार–

मैं "श्रमदान" तथा "भूदान" आन्दोलनों को अति उदारता की दृष्टि से देखता हूँ, परन्तु मैं इस आस्था को नहीं छिपा सकता कि इससे भी पहले करने का काम नैतिक सुधार तथा उचित अनुभूति एवं चेतना का उत्पन्न करना था। हमें इतिहास से पता चलता है कि प्राचीन युग में भूमि का उचित रूप से बंटवारा किया जाता था और अनेक युग तो ऐसे बीते हैं कि वायु एवं जल के समान भूमि को भी एक आवश्यक तत्व एवं मनुष्य का मौलिक अधिकार समझा जाता था। परन्तु तत्पश्चात् मनुष्यों के लोभ एवं लोलुपता ने पीड़ितों को भूमिहीन तथा अनावश्यक व्यक्तियों को स्वामी बना दिया। यदि नैतिक अनुभूति और मानवता का सम्मान न उत्पन्न हुआ तो फिर इसी की आशंका है कि वितरित की हुई भूमि पर फिर अधिकार जमा लिया जायेगा। अतः और जरूरतमन्दों को अधिकार से वंचित कर दिया जायेगा। जब तक यह चेतना उत्पन्न न हो और अन्तरात्मा जागरूक न हो, उस समय तक इन प्रयासों के परिणामों तथा वचनों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। आज नैतिक पतन इस सीमा तक पहुँच चुका है कि घूस ख़ोरी, चोरबाज़ारी, ग़बन तथा विश्वासघात में कमी नहीं, अपितु लोगों का कहना है कि कुछ अधिकता ही है। धनी बनने की आकांक्षा

एवं अभिलाषा उन्माद (जुनून) की सीमा तक पहुंच गई है। उत्तरदायित्व की अनुभूति का अभाव है। मनोदशा यह है कि एक दूसरे की नेकी की आड़ लेकर बदी करना चाहता है। जब सब की यह दशा हो जावे तो वह सदाचार फिर कहां से आयेगा जिसकी आड़ में और जिसके आंचल में दुष्टता छिप सके। मेरे एक मिस्त्री मित्र ने अपने एक व्याख्यान में इसका एक बड़ा अच्छा उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि एक राजा ने एक रात्रि में यह घोषणा की कि एक हौज़ दूध का भरा हुआ चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति एक घड़ा दूध इसमें डाल दे और प्रातः अपने दाम ले ले। अन्धेरी रात्रि थी, प्रत्येक व्यक्ति ने यह विचार किया कि मैंने यदि एक घड़ा जल इसमें ड़ाल दिया तो इतने बड़े हौज़ में क्या पता चलेगा। सब लोग तो दूध डालेंगे ही। परन्तु संयोगवश हर एक ने यही सोचा और दूसरे के सदाचार एवं सत्यनिष्ठा के विश्वास पर विश्वासघात करना चाहा। परिणाम स्वरूप प्रातः जब राजा ने देखा तो पूरा हौज़ पानी से भरा था, दूध का चिन्ह मात्र न था। जब किसी बस्ती की यह दशा हो जाय तो फिर उसकी कोई सुरक्षा नहीं कर सकता।

वास्तविक आशंका–

याद रखिए इस देश के लिए कोई बाह्य आशंका अथवा भय नहीं है। इस देश के लिए भयंकर आशंका यह नैतिक पतन, यह अपराधी मनोवृत्ति, यह धन सम्पत्ति की होड़ तथा अपने स्वार्थ हेतु अपने भाई का गला काटने की प्रवृत्ति है। क्या यूनान तथा रोम (अपने समय के उन्नतिशील देश) को किसी बाहरी शत्रु ने तबाह किया नही, वरन् उन्हें नैतिक रोग जिनका घुन उनको लग गया था। फिर इस समय एक देश का नैतिक पतन समस्त संसार के लिए ख़तरा है। संसार जब ही सुख एवं शान्ति का जीवन व्यतीत कर सकता है, जब संसार का प्रत्येक देश सुखी और उसकी शासन व्यवस्था सुदृढ़ हो।

पैग़म्बरों का कारनामा (ईश दूतों की कृति)–

पैग़म्बरों का यही कारनामा है कि उन्होंने सुचरित्र एवं सदाचारी व्यक्ति तैयार किये। ईश्वर के भक्त तथा उससे डरने वाले, मानव से प्रेम करने वाले, दूसरे के दुख को समेटने वाले, अपने पराये में न्याय करने वाले, सत्य बोलने तथा सत्य का साथ देने वाले, उत्पीड़ितों को सहयोग देने वाले। संसार के किसी व्यक्ति, किसी संस्था अथवा किसी प्रशिक्षणालय ने ऐसे चरित्रवान व्यक्ति तैयार नहीं किये। विश्व को अपन आविष्कारों पर अभिमान है, वैज्ञानिकों को अपनी सेवाओं पर गर्व है, परन्तु पैग़म्बरों से बढ़ कर किसने मानवता की सेवा की, उनसे अधिक बहुमूल्य वस्तु किसने संसार को प्रदान की। उन व्यक्तियों ने संसार को गुलज़ार बना दिया, उन्हीं के कारण संसार की प्रत्येक वस्तु उपयोगी बन गई और हर सम्पत्ति ठिकाने लगी। आज भी संसार में जो सदाचारी प्रवृत्ति, जो सत्य

एवं न्याय और मानवता के प्रति प्रेम पाया जाता है, वह उन्हीं पैग़म्बरों के प्रयासों, प्रयत्नों तथा प्रचार का परिणाम है। यह आधुनिक संसार भी केवल आविष्कारों तथा सांस्कृतिक प्रगति के बल पर नहीं चल रहा है, यह केवल उस सच्चाई, सत्य–निष्ठा, न्याय एवं प्रेम पर आधारित है जो पैगम्बर उत्पन्न कर गए।

जारी.............

जगनायक................

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों ने अपनी दावती और दीनी मुहिम में जो 23 साल रही, आखिरी 8 साल की मुद्दत में जो मुकाबले किये उसमें सिर्फ एक हज़ार आदमी काम आए और इस्लाम पर इल्ज़ाम लगने वाले जमहूरियत और आज़ादी का दावा करने के बावजूद अपनी जंगों में लाखों से ज़्यादा इंसानों को मार देते हैं और उसके नतीजे में क़ौमों और मुल्कों में सख़्त इंतिशार व बेचैनी की फिज़ा बना देते हैं और मुसलमानों ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सरकरदगी में सिर्फ 8 साल के मुकाबले में पूरे अरब द्वीप को अमन का गहवारा बना दिया।

इस सबके बाद वेसटर्न मीडिया इस्लामी दुनिया के किसी हिस्से में दो चार आदमी के ना मालूम हाथों से मारे जाने पर ऐसा वावैला मचाता है कि यूरोप में लाखों इंसानों के मारे जाने से ज़्यादा जुल्म बरपा हुआ और कोई भी दहशतगर्दी का वाकि़या दुनिया में कहीं होता है तो तहक़ीक़ से पहले ही फौरन कहा जाता है कि मुसलमान ने किया होगा और मुसलमान कौन हैं? मुसलमान वह है जो अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मानने वाला और उनके हुक्मों पर अपनी जान कुर्बान करने वाला, और नबी की शख़सियत वह शख़सियत है जिसने खुद रहम व हमदर्दी अपने दुश्मनों तक से इन्तिहाई ग़ैर मामूली तरीक़े से रवा रखी और अपने मानने वालों को इसको इख़्तियार करने की तल्क़ीन की और मुसलमानों ने सारी कमज़ोरियों के बावजूद बहुत कुछ इसी पर अमल किया। मुसलमानों की बाद की जंगों की स्टडी कीजिए, यही बात नज़र आयेगी जिसका ऐतराफ ग़ैर मुस्लिम इतिहासकारों ने भी किया है और मुसलमानों पर इल्ज़ाम लगाने वाले इस वेस्टर्न मीडिया ने इस बात को दबाया और छिपाया कि उनके वेस्टर्न कन्ट्री में अब भी सिर्फ सियासी गरज़ के लिए लाखों का खून आसानी के सथ करा दिया जाता है। सच कहा है अरबी शायर नेः–

अनुवादः– "अगर उनका एक आदमी भी किसी नामालूम जगह जंगल में मार दिया जाता है तो कहते हैं कि यह बहुत बड़ा जुर्म हुआ जो किसी तरह लायक मआफी नहीं। और दूसरों की पूरी पूरी क़ौम को उसके पुरअमन होने के बावजूद ख़त्म करदें तो उस पर एतराज़ करने पर सिर्फ़ इतना कहेंगे कि हाँ ये मसला ग़ौर करने के क़ाबिल हो सकता है।

❖❖❖

इख़्लास और उसके बरकात व फ़ायदे

प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी —मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

बड़ा बनने के लिए इख़्लास ज़रूरी है–

हजरत सैय्यद अहमद शहीद रह0 ने एक बार फरमाया कि जब से शुऊर की आंखें खोली हैं (यानी जबसे समझ आई) उस वक्त से आज तक कोई काम बिला नीयत के नहीं किया, यहां तक कि हंसना, बोलना, इसमें भी नीयत होती थी कि हम हंसेंगे तो उसका दिल खुश होगा, और किसी अल्लाह वाले का दिल खुश करने से अल्लाह बहुत खुश होता है, और बड़ा उम्दा उस पर बदला देता है, इसीलिए कहा गया है कि मुंह बना कर मत मिला करो, बल्कि अच्छे अख़्लाक़ और हंस कर मिलना, यह सुन्नत है, और बड़े आला दर्जे की चीज़ है, लोग इसको भूल गये हैं, इस को अच्छा नहीं समझते, जब कि अल्लाह इससे खुश होता है।

मालूम हुआ कि बड़ा बनने के लिए इख़्लास जरूरी है यह हमारे बड़े बुजुर्ग बाज मर्तबा नमाज़ों में अपनी सिहत की कमज़ोरी और दूसरी परेशानियों से सिहतमंदों से पीछे हो जाते हैं। और ताकतवर लोग अपनी दौड़ भाग से आगे हो जाते हैं लेकिन हमारे बड़े बुजुर्ग अपनी नीयतों के जरिये आगे बढ़ जायेंगे क्योंकि वह छोटे छोटे कामों में भी अल्लाह को राजी करने की नीयत कर लेते हैं तो अल्लाह तआला उनसे खुश हो कर उनके काम को बहुत आगे बढ़ा देगा, और इतनी तरक़्क़ी अता फरमायेगा कि काम करने में लुत्फ आयेगा, और इतना आयेगा कि उम्दा से उम्दा फल खाने में, हल्वा खाने में, वह मजा नहीं आयेगा जितना काम करने में मजा आयेगा, मैं यूं ही नही कह रहा हूं, ऐसे लोगों को मैंने देखा है कि जिन को काम करने में, और दूसरों को खिलाने में इतना लुत्फ आता था कि शायद खुद खाते तो इतना लुत्फ न आता।

हजरत रायपुरी रह0 जब कोई आता था तो बड़ा एहतिमाम फरमाते थे और खुद बैठे रहते थे, और सबको खिलाते रहते थे, खादिमों ने कहा कि हज़रत आप तो खाते नहीं सब को खिलाते रहते हैं? फरमाया जब तुम्हारे मुंह से लुक़्मा उतरता है तो मुझे महसूस होता है कि मेरे मुंह में जा रहा है, और खाने में जितना लुत्फ तुम को आता है उतना ही मुझे भी आता है, उससे जियादा ही आता है, मुझे खिलाने में जो मजा आ रहा है शायद वह तुम्हें खाने में न आ रहा हो। जब अल्लाह के बन्दे इस चीज की मश्क कर लेते हैं तो अल्लाह तआला उनकी हर चीज कबूल फरमा लेते हैं, क्योंकि उनका कोई काम बिला नीयत के नहीं होता।

हज़रत मौलाना रह0 को मैंने कई मर्तबा देखा कि फौरन नीयत कर लेते थे, कहीं जाते थे तो नीयत करते थे, घर में दाखिल होते थे, औरतों से मिलने जाते थे तो नीयत करते थे, हमारे घर की बच्चियां हैं उनसे मिलना है, उनके पास बैठना है, यह अल्लाह का हुक्म है, उससे उनका दिल खुश होगा, और अल्लाह राजी होगा, अब औरतों के पास बैठेंगे सवाब मिलेगा, बच्चों के पास बैठेंगे, सवाब मिलेगा, खाना खायेंगे सवाब मिलेगा।

❖❖❖

मैं दाँत देख कर...............

दो साल का पड़वा चाहिए, बोले यह पड़वे जान कर ख़रीदे गये हैं इनमें कोई भी दो साल से कम का नहीं है, मैंने कहा मुआफ कीजिए इनमें से सिर्फ एक का दांत देखना चाहता हूँ, वह नाराज़ हो गये, कहने लगे क्या मुझ पर एतिबार नहीं है? मैंने जानकर दो साल या उससे जियादा के पड़वे खरीदे हैं, क्या बेचने वाला मुझ से झूट बोलेगा? मैंने उस पर एतिबार किया है, कभी ऐसा होता है कि पड़वा दो साल पूरे कर लेता है मगर दांतता नही है। मैंने कहा यह मुमकिन है, लेकिन आमतौर से दो साल का पड़वा दांता हो जाता है, दो साल से पहले नहीं दाँतता तो हम को चाहिए कि हम दाँत देख कर ही कुर्बानी करें या अपने घर का पड़वा हो और यक़ीनी तौर पर मालूम हो कि दो साल का है।

कहने लगे अगर आप मुझ पर एतिबार नहीं करते तो जाइये कहीं और हिस्सा लीजिए, मैंने कहा मैं कहीं भी हिस्सा ले लूंगा, लेकिन अपने भाइयों की कुर्बानी सही होने के लिए इन पड़वों के दाँत देखना चाहता हूँ, उन्होंने इस पर नागवारी का इज़हार किया और पड़वों के दाँत देखने की इजाज़त न दी मैं दूसरी जगह गया और कहा मैं तो पड़वा देखूंगा और उसके दाँत भी देखूंगा तब ख़रीदूंगा, उन्होंने एक पड़वा दिखाया, मैंने उसको चेक किया वह दाँता था उसको ख़रीद कर कुर्बानी की। इस साल तो मैं यह शेर गुन गुना रहा हूँ–

"कुछ माल से मैं नफ़्स पर हासिल करूंगा फ़त्ह, इस ईद में इक जानवर अच्छा करूंगा ज़ब्ह"
कम उम्र की कुर्बानी तो होती नहीं कबूल, मैं दांत देख कर ही पड़वा करूंगा ज़ब्ह"

कौन यह झगड़े लेगा, लोग हिस्सा लेंगे पैसा देदेंगे पड़वा देखना और उम्र में इतमिनान करके झगड़ा कहां पालेगा वह तो गोश्त लाने भी न जाएगा, उनकी नेक नीयती और हुस्ने ज़न का उनको सिला मिलेगा, लाट खरीदने वाले अगर कम उम्र ज़ब्ह करेंगे तो कियामत के दिन जवाब देह होंगे, काश कि लाट खरीदने वाले हिस्से की कीमत के एलान के साथ यह भी एलान करते की हमने सभी पड़वे चेक कर लिए हैं।

सब दो दाँत या उससे ज़ियादा के हैं। अल्लाह तआला तौफीक़ दे और अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की राह पर चालाए।

❖❖❖

फ़ारसी की दो तरकीबों का परीचय
और उनको हिन्दी लिपि में लिखने की विधियाँ

—इदारा

उर्दू और फारसी की लिपियाँ एक समान हैं। उर्दू और फारसी में हरकतों के लिए ज़बर, ज़ेर और पेश चिन्ह हैं इन हरकतों को बढ़ा कर आवाज़ निकालने के लिए, अलिफ, वाव, और या से मदद ली जाती है।

हिन्दी में ज़बर के लिए कोई चिन्ह नही है हिन्दी का हर अक्षर, पृथक ज़बर की ध्वनि से पढ़ा जाता है। हिन्दी के हर शब्द का अन्तिम अक्षर उर्दू की भांति साकिन (हलन्ती) पढ़ा जाता है परन्तु अरबी में शब्द का अन्तिम अक्षर जबर वाला भी होता है इसलिए जब अरबी वाक्य हिन्दी में लिखते हैं तो हर साकिन अक्षर या तो आधा लिखते हैं या उसके नीचे हलन्त लगाते हैं, जिस अक्षर में हलन्त न हो उसके पृथक अक्षर की भाँति जबर वाला पढ़ेंगे जैसे अल्लाहुम्म, इन्नक, अन्त, इन शब्दों में अन्तिम अक्षर म,क,त को पृथक अक्षर की भांति पढ़ेंगे। यह समस्या केवल अरबी वाक्य, हिन्दी में लिखने में आती है, उर्दू फारसी में नहीं।

हिन्दी में ज़ेर के लिए इ की मात्रा लगाते हैं जैसे हिसाब, किताब, निकाह आदि, परन्तु फारसी में एक ज़ेरे मजहूल आती है इसको हिन्दी में लिखना जरा कठिन होता है हम इसको ए की मात्रा से लिखते हैं और उसको ज़रा कम खींचते हैं जैसे किताबे खुदा, रसूले खुदा इसका और बयान तरकीब के बयान में आएगा।

हिन्दी में पेश के लिए उ की मात्रा लगाते हैं जैसे गुलाब बड़े ऊ की मात्रा से पेश के साथ वाव वाले अक्षर को लिखते हैं जैसे "कू" और बड़ी ई की मात्रा से जेर वाले अक्षर के साथ या को लिखते हैं जैसे "की"।

मुरक्कबे इज़ाफी–

जैसे कौम का खादिम, इसमें पहला शब्द "कौम" मुजाफ इलैहि है दूसरा शब्द "का" इजाफत का चिन्ह है, तीसरा शब्द "खादिम" मुजाफ है, तीनों का समूह मुरक्कब इजाफी कहलाता है, फारसी में इसको उलट देते हैं पहले खादिम लायेंगे फिर कौम, "क" के स्थान पर खादिम के अन्तिम अक्षर को जेर देंगे यह जेर "इ" की मात्रा के बजाये ए की मात्रा से देंगे परन्तु उसको ए की मात्रा की भांति पूरा न खींच कर आधा खींचेंगे और लिखेंगे "खादिमें कौम"।

मुरक्कबे तौसीफ़ी–

जैसे नया साल, इसमें पहला शब्द "नया" सिफत है और दूसरा शब्द साल मौसूफ है इन दोनों का समूह मुरक्कबे तौसीफ़ी कहलाता है, फारसी में इसको उलट देते हैं, मौसूफ साल पहले लाऐंगे और सिफत नया की फारसी नौ, बाद में लायेंगे, मौसूफ को ज़ोर देंगे जैसे साले नौ।

इन दोनों तरकीबों में पहले शब्द को ज़ेर देने के कई रूप हैं जिनको अलग अलग बयान किया जाता है।

1). पहले शब्द के अन्त में अलिफ़ हो जैसे निदा, खुदा आदि इस शक्ल में शब्द के अन्त में ए बढ़ाऐंगे जैसे निदाए मिल्लत, खुदाए वाहिद, सज़ाए मौत आदि।

2). पहले शब्द के अन्त में वाव हो जैसे बू, जू, खू, इन के अन्त में भी ए बढ़ाऐंगे जैसे बूए गुलाब, जूए शीर, खूए बद आदि।

3). पहले शब्द के अन्त में हम्ज़ा हो जैसे शुअ़रा, सू (हम्ज़ा हिन्दी में नहीं जाहिर करते) इस सूरत में भी अन्त में ए बढ़ाऐंगे जैसे शुअराऐ हिन्द, सूए हज़्म उलमाए अरब आदि।

4). पहले शब्द के अन्त में य हो यह य अगर तशदीद वाली हो तो हिन्दी में बड़ी ई की मात्रा ही से लिखी जाती है जैसे नबी, मर्जी इस सूरत में अन्त में य में ए की मात्रा लगा कर बढ़ाऐंगे जैसे नबीये करीम, मर्ज़ीये ख़ुदा आदि।

5). पहले शब्द के अन्त में छोटी ह हो जैसे बन्दा, सज्दा, कल्मा, छोटी ह को हम आ की मात्रा से लिखते हैं लेकिन फारसी तरकीब की हिन्दी में आ की मात्रा हटा देते हैं और अन्तिम अक्षर को अलग करके दो डैशों के बीच ए के साथ मिला कर लिखते हैं जैसे बन–दए–खुदा, सज–दए–शुक्र, कल–मए–इस्लाम आदि।

इस शक्ल (रूप) में बन्दा, सज्दा, कल्मा में जो आधा न, आधा, ज और आधा ल हैं उनको पूरा लिखेंगे लेकिन पढ़ने में साकिन (गतिहीन) आधे अक्षर की आवाज़ निकालेंगे।

इस तरकीब को एक और प्रकार से भी लिखा जाता है वह यह कि बन्दा, सज्दा, कल्मा के अन्तिम आ की मात्रा जो वास्तव में चुप "ह" है हटा कर दो डैशों के बीच ए लिख कर तरकीब का दूसरा शब्द लिखते हैं जैसे बन्द–ए–ख़ुदा, सज्द–ए–शुक्र, कल्म–ए–इस्लाम लेकिन इसमें यह जानना ज़रूरी है कि पहले शब्द का अन्तिम अक्षर पृथक अक्षर की भांति पढ़ कर ए की ध्वनि निकालेंगे।

6). ऊपर की पाँचों शक्लों में से कोई शक्ल न हो तो तरकीब के पहले शब्द के अन्तिम अक्षर को ए की मात्रा देंगे लेकिन ए की मात्रा खींच कर न पढ़ेंगे जैसे ख़ल्के ख़ुदा जमीने हिन्द, तामीरे हयात आदि। कुछ लोग इस तरकीब को दोनों शब्दों के बीच डैशों के भीतर ए बना कर लिखते हैं जैसे ख़ल्क –ए–खुदा, जमीन–ए–हिन्द, तामीर–ए–हयात हम इसको सही नहीं समझते इसलिए कि ए को किसी अक्षर से जोड़ने के लिए उस की मात्रा है ए अलग लिखी जायेगी तो उसकी आवाज ए होगी। यह विधि जब ही शुद्ध है जब तरकीब के पहले शब्द के अन्त में चुप ह हो। जिसका बयान ऊपर आ चुका है।

पण्डित नन्द कुमार अवस्थी ने इसके लिए ए की मात्रा को टेढ़ा किया था लेकिन टेढ़ी मात्रा कम्प्यूटर में नहीं है, इसलिए इसको नही अपनाया जा सकता है।

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः इस्लाम में कुर्बानी का क्या हुक्म है?

उत्तरः इस्लाम के एक बड़े विद्वान इमाम अबू हनीफा के निकट किताब व सुन्नत की रौशनी में कुर्बानी मालदार मुसलमानों पर वाजिब है।

प्रश्नः एक शख्स के चार बेटे हैं और उनकी बीवियाँ (बहूएं) हैं वह शख़्स साहिबे निसाब है, उनके चारों बेटों के नाम बैंकों में अलग अलग इतना बैलेन्स है कि हर एक साढ़े बावन तोला (612 ग्राम), चाँदी खरीद सकता है हर बहू के पास इतना ज़ेवर है कि जिससे चाँदी का निसाब बन जाता है, उस की बीवी के पास भी 612 ग्राम चाँदी से जियादा जेवर है, ऐसी सूरत में उस घर में चार बेटे चार बहुएं, बीवी और खुद मिला कर दस कुर्बानियां होंगी या घर के मुखिया की तरफ से सिर्फ एक कुर्बानी होगी ?

उत्तरः अगर हर बहू अपने ज़ेवर की मालिक है और उसका ज़ेवर 612 ग्राम चाँदी की कीमत के बराबर या उससे जियादा है, इसी तरह हर लड़का अपने बैंक बैलेन्स का मालिक है और उसका बैंक बैलेंस 612 ग्राम चाँदी या उससे जियादा की कीमत का है इसी प्रकार अगर बीवी अपने निसाब भर के या उससे जियादा ज़ेवर की मालिक है और खुद साहिबे निसाब है तो घर के ऐसे तमाम लोगों की तरफ से कुर्बानी वाजिब है, लेकिन अगर घर का मुखिया सबका वास्तविक (वाक़ई) मालिक है, किसी बहू या बीवी के अपने ज़ेवरों पर इख्तियार नहीं है सिर्फ पहनने के लिए दिया गया है, और लड़कों को अपने बैंक बैलेंन्स पर इख़्तियार नहीं है, किसी मसलहत से सबके नाम खाता है मालिक मुखिया ही है (मगर वास्तव में ऐसा होता नहीं है लेकिन अगर है) तो घर के मुख्यिा ही पर कुर्बानी वाजिब होगी, दूसरे लोगों की तरफ से कुर्बानी की जाएगी तो उनको सवाब मिलेगा। और चाहिए कि अगर इस्तिताअत (सामर्थ्य) हो तो कुर्बानी करके सवाब लें।

प्रश्नः अगर कोई मालदार मुसलमान कुर्बानी के दिनों में कुर्बानी करने के बजाए कुर्बानी के जानवर की कीमत सद्का करके सवाब ले तो क्या उसको कुर्बानी मुआफ़ हो जाएगी?

उत्तरः अगर कोई मालदार मुसलमान जिस पर कुर्बानी वाजिब है वह कुर्बानी के दिनों में एक नहीं कई जानवरों की कीमत सदक़ा कर दे तो उसको सद्क़ा करने का सवाब तो मिलेगा लेकिन उसका वाजिब अदा न होगा और वाजिब छोड़ने का गुनाह उसके सर रहेगा, अहनाफ़ का यही मसलक है। (आलमगीरी)

प्रश्नः अगर किसी किसान के पास इतना गल्ला है जो उसके घर वालों के खाने के

लिए साल भर को काफी है मगर उसके पास न तो निसाब भर के ज़ेवर हैं न 612 ग्राम चाँदी खरीदने के पैसे हैं तो क्या उस पर कुर्बानी वाजिब है?

उत्तरः ऐसा किसान जिसके पास उसके घर वालों के खाने के लिए साल भर का ग़ल्ला मौजूद है चाहे उसके पास न 612 ग्राम चांदी के ज़ेवर हों न 612 ग्राम चांदी खरीदने के पैसे हों तब भी उस पर कुर्बानी वाजिब होगी। ऐसी सूरत में सिर्फ घर मालिक पर कुर्बानी वाजिब होगी।

प्रश्नः अगर कोई मालदार मुसलमान कुर्बानी के दिनों में सफर पर हो तो क्या उस पर कुर्बानी वाजिब है?

उत्तरः मालदार मुसलमान जिस पर कुर्बानी वाजिब है अगर वह कुर्बानी के दिनों में कमसे कम 78 कि0मी0 या उससे जियादा दूरी के सफर का मुसाफिर है तो उस पर कुर्बानी वाजिब नहीं, लेकिन वह अगर सफर के दौरान कुर्बानी के दिनों में कहीं 15 दिन कियाम का फैसला कर ले या कुर्बानी का वक्त ख़त्म होने से पहले घर आ जाता है तो उस पर कुर्बानी वाजिब हो जाएगी।

प्रश्नः अगर कोई दूसरे देश में नौकरी करता है उस पर कुर्बानी वाजिब है अगर उसके घर वाले अपने देश में उसकी तरफ से कुर्बानी करदें तो कुर्बानी हो जाएगी या नहीं?

उत्तरः एक घर में कई लोगों पर कुर्बानी वाजिब हो और घर का मुखिया सब की तरफ से कुर्बानी के जानवर में हिस्सा खरीद ले, जब कि घर के उन सब को मालूम हो कि मेरी तरफ से हिस्सा लिया गया है तो ऐसी सूरत में उन को इजाजत देने की जरूरत नहीं उन का वाजिब अदा हो जाएगा लेकिन कोई शख़्स प्रदेश में है और उस पर कुर्बानी वाजिब है उसके घर वाले अपने देश में उसकी इजाज़त या उसके बताए बिना कुर्बानी कर देंगे तो उसको कुर्बानी का सवाब तो मिलेगा मगर उसका वाजिब अदा न होगा, कुर्बानी से पहले उसको इत्तिला हो या उसकी इजाज़त हो यह ज़रूरी है।

प्रश्नः अगर कोई शख़्स अपनी जानिब से कुर्बानी न करके किसी बुजुर्ग या अपने बाप दादा की तरफ से कुर्बानी करे तो इसका क्या हुक्म है?

उत्तरः कोई शख़्स जिस पर कुर्बानी वाजिब है अपनी कुर्बानी न करके दूसरे बुजुर्गों या खान्दान के लोगों की तरफ से कुर्बानी करेगा तो उसको और जिसकी तरफ से कुर्बानी की है उसको सवाब मिलेगा लेकिन खुद उस का वाजिब उस पर बाक़ी रहेगा और वाजिब छोड़ने का गुनाह होगा। लिहाज़ा चाहिए कि वह पहले अपना वाजिब अदा करे फिर अगर कर सकता है तो दूसरों की तरफ से कुर्बानी करे।

प्रश्नः कुर्बानी के जानवर की क्या उम्र होनी चाहिए?

उत्तरः कुर्बानी के लिए ऊँट की कम से कम उम्र पाँच साल है और भैंस, भैंसा वगैरह की उम्र कम से कम दो साल है नीज़ बकरा, बकरी, भेंड वगैरह की उम्र कम सेकम एक साल है, यह जो उम्र लिखी गई है उससे कम उम्र के जानवर की कुर्बानी

न होगी इसलिए इस उम्र से जियादा उम्र का जानवर ही कुर्बानी में ज़ब्ह करें, अगर जानवर की सही उम्र न मालूम हो और जानवर की उम्र कम लगे तो उसके दाँत देखें सामने के दाँतों में बीच के दो दाँत अगर कुछ मोटे और दूसरे दाँतों से बड़े हैं तो जानवर की उम्र कुर्बानी केलिए दुरुस्त है लेकिन अगर दो दांत बीच के बड़े नहीं है तो जानवर की उम्र कुर्बानी के लिए दुरुस्त नहीं है उसकी कुर्बानी न होगी। इस सिलसिले में बड़ी कोताहियां चल रही हैं, बहुत से लोग जानवरों की लाट खरीद कर लोगों की तरफ से कुर्बानी का नज़्म करते हैं मगर उनसे यह चूक होती है कि वह हर जानवर के दाँत नहीं देखते, अगर कम उम्र का जानवर कुर्बानी में ज़ब्ह कर देंगे तो कुर्बानी न होगी ऐसी सूरत में क़ुर्बानी का नज़्म करने वाले बड़े गुनाह के मुर्तकिब होंगे।

प्रश्नः कुर्बानी का जानवर कैसा होना चाहिए?

उत्तरः क़ुर्बानी का जानवर सिहत मंद हो, मोटा तगड़ा हो, दुब्ले जानवर की कुर्बानी हो जाती है मगर बहुत ज़ियादा दुबला न हो, बूढ़े जानवर की क़ुर्बानी भी हो जाती है, बस जानवर खाता पीता हो चलता फिरता हो, कुर्बानी के जानवर में कोई ऐब न होना चाहिए, अगर कोई ऐब हो तो किसी आलिम से मालूम करलें इसलिए कि कुछ ऐबों के साथ कुर्बानी हो जाती है और कुछ ऐबों से कुर्बानी नहीं होती इसलिए ऐब बता कर मसअला मालूम करें। सीधी सी बात यह है कि क़ुर्बानी के लिए बे ऐब जानवर ही खरीदें।

प्रश्नः क़ुर्बानी कब से कब तक की जा सकती है?

उत्तरः कुर्बानी का वक्त बक़रईद (ईदुलअज़्हा) की नमाज़ के बाद से 12 जिलहिज्जा को गुरूबे आफताब से पहले तक है।

प्रश्नः कुर्बानी का गोश्त तक्सीम करने का क्या हुक्म है?

उत्तरः मुस्तहब है कि कुर्बानी का एक तिहाई गोश्त ग़रीबों में बांटा जाए और एक तिहाई अजीज़ों में बांटा जाए, बाकी एक तिहाई घर में रखा जाए अगर किसी के घर में खाने वाले जियादा हों और वह तक्सीम न करें तो उस पर कोई गुनाह न होगा मगर यह अच्छी बात नहीं है, न तिहाई दें तो कुछ हिस्सा तो ग़रीबों और अजीज़ों को हदिया करें।

प्रश्नः क़ुर्बानी की खाल का क्या हुक्म है?

उत्तरः कुर्बानी की खाल अपने काम में ला सकते हैं जैसे मुसल्ला बना लें, झोला बना लें, डोल बना लें वगैरह, लेकिन अगर खाल बेची जाएगी तो उसकी कीमत सद्क़ा होगी वह ग़रीब मुसलमानों का हक बन जाएगी, कुर्बानी की खाल की कीमत से इमारत बनाना, मस्जिद बनाना, मुदर्रिसीन की तनख़्वाह देना जाइज़ नहीं।

प्रश्नः कुर्बानी करने का तरीक़ा बताइये।

उत्तरः कुर्बानी से पहले छुरी खूब तेज़ करलें, फिर चाहिए कि जिसकी तरफ से कुर्बानी की जा रही है वह खुद ज़ब्ह करे, दूसरे से भी ज़ब्ह करवा सकता है, ऐसा नहीं है कि दूसरा ज़ब्ह करेगा तो कुर्बानी उसकी तरफ से हो जाएगी,

और बेहतर यह है कि दूसरे की तरफ से ज़ब्ह करे तो वह दुआ में कहे कि ऐ अल्लाह इसको फुलां की तरफ से क़बूल फरमा, ज़ब्ह के लिए जानवर को इस तरह लेटाए कि जानवर का मुँह किबला कि तरफ हो और ज़ब्ह करने वाला इस तरह ज़ब्ह के लिए खड़ा हो कि उसका मुँह भी किबला की तरफ हो मगर यह बेहतर है ज़रूरी नहीं। फिर ज़ब्ह करने वाला ज़ब्ह करते वक्त बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर कहे यह कहना फ़र्ज़ है। बस कुर्बानी हो गई लेकिन कुर्बानी का मस्नून तरीका यह है कि ज़ब्ह से पहले यह दुआ पढ़े— यह कुर्आने मजीद की आयतें हैं आयतों को तलफ़्फ़ुज़ के साथ हिन्दी में लिखना मुश्किल है बस हिन्दी में मदद के लिए लिख कर आयतों के नम्बर लिख रहा हूँ, कुर्आने मजीद में देख लें, अऊज़ु बिल्लाह व बिस्मिल्लाह पढ़ कर पढ़ें— "इन्नी वज्जहतु वजहिया लिल्लज़ी फ़तरस्समावाति वल अर्ज़ हनीफ़व्वं मा अना मिनल मुश्रिकीन (अलअनआम:'79) इन्न सलाती व नुसुकी व महयाय व ममाती लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन ला शरीक लहू व बिज़ालिक उमिर्तु व अना अव्वलुल मुस्लिमीन। (अलअनआम:164)" फिर कहें अल्लाहुम्म लक व मिन्क, फिर बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर कह कर ज़ब्ह करें। ज़ब्ह में चारों रगें कटना चाहिएं या कम से कम तीन रगें कटें।

फिर कहें अल्लहुम्म तकब्बल मिन्नी कमा तकब्बलत मिन हबीबिक मुहम्मदिव सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व ख़लीलिक इब्राहीम अलैहिस्सलाम।

अगर दूसरे की तरफ से कुर्बानी ज़ब्ह कर रहे हों तो मिन्नी के बजाए मिन्न फुलां कहें यानी फुलां की जगह उसका नाम ले जैसे अब्दुल्लाह की तरफ से ज़ब्ह कर रहे हों तो कहें "अल्लाहुम्म तक़ब्बल्हु मिन अब्दिल्लाह कमा तक़ब्बलत मिन हबीबिक मुहम्मदिंव्व वमिन ख़लीलिक इब्राहीम अलैहिमस्लात, वस्सलाम। अगर कुर्बानी में कई लोग शरीक हों तो कहे "अल्लाहुम्म तकब्बलहु मिन (सब के नाम ले) उन नामों में खुद भी शरीक हों तो कहे अल्लाहुम्मम तकब्बलहु मिन्नी व मिन (सबके नाम लेकर) फिर आखिर तक पढ़ें ज़रूरी इतना ही है कि बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर कह कर ज़ब्ह करे, दूसरे की तरफ से ज़ब्ह कर रहा है उसने जानवर खरीदा है या वह जानवर का मालिक है तो उसका नाम लें या न लें उसकी तरफ से कुर्बानी हो जाएगी।

प्रश्नः यतीम अगर मालदार हो तो उसके माल से कुर्बानी की जाएगी या नही?

उत्तरः यतीम से यहां मुराद वह नाबालिग़ बच्चा या बच्ची है जिसके बाप का इन्तिक़ाल हो चुका हो, उसके माल पर न ज़कात है न ईदुल फित्र का फित्रा न कुर्बानी यहां तक कि वह बालिग़ हो जाए, बालिग़ होने पर वह अपने माल पर सद-क-ए-फित्र निकालेगा, कुर्बानी करेगा और माल पर साल गुज़र जाने पर ज़कात अदा करेगा, उसकी नाबालिग़ी के ज़माने में यह तीनों खर्चे मुआफ रहेंगे।

प्रश्नः तक्बीरे तशरीक़ क्या है और वह कब कही जाती है?

उत्तरः तक्बीरे तशरीक यह है— अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, लाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्द, यह तक्बीर 9 जिलहिज्जा की फ़ज्र के वक्त से 12 जिलहिज्जा की अस्र तक की हर फर्ज नमाज़ के बाद आवाज से कहना वाजिब है, यहां तक कि अगर इमाम भूल जाए तो मुकतदी ज़ोर से कह कर उसको याद दिलाएं। अलबत्ता यह तक्बीर औरतें आहिस्ता कहेंगी।

प्रश्नः जानवर के किस ऐब पर कुर्बानी दुरुस्त नहीं?

उत्तरः अन्धा, काना, एक तिहाई या उससे ज़ियादा दुम कटा, एक तिहाई या उससे ज़ियादा कान कटा, की कुर्बानी दुरुस्त नहीं, ऐसा लंगड़ा की एक पाँव ज़मीन पर रख ही न पाता हो, उसकी भी कुर्बानी दुरुस्त नहीं, जिस जानवर के दाँत न हों या आधे से ज़ियादा दाँत गिर गये हों उसकी कुर्बानी दुरुस्त नहीं, जिस जानवर के पैदाइश ही से सींग नहीं या सींग हैं मगर कुछ हिस्सा टूट गया है तो उसकी कुर्बानी दुरुस्त है अलबत्ता अगर सींग जड़ से टूट गये हों तो कुर्बानी दुरुस्त नहीं, ख़स्सी (बध्या) जानवर की कुर्बानी दुरुस्त है।

प्रश्नः ईदैन की नमाज़ का तरीक़ा बताइये।

उत्तरः ईदैन (ईदुल फित्र और ईदुल अज्हा) की नमाज़ आक़िल बालिग मुसलमानों पर वाजिब है, यह दोनों नमाजें सूरज निकल कर कुछ बुलन्द होने के बाद से ज़वाल से पहले तक पढ़ी जाती हैं दोनों नमाजों में कुछ तक्बीरें जायद होती हैं अहनाफ (हनफी लोग) छे तक्बीरें जियादा कहते हैं, जब कि बाज दूसरे इमामों के नजदीक बारह ज़ाइद तक्बीरें हैं, दोनों की दलीलें मजबूत हैं इसलिए दोनों सही हैं मुक़तदियों को चाहिए कि इमाम जितनी तक्बीरें कहे वह उसका इत्तिबाअ़ करें चूंकि हमारे यहां ईदगाहों में इमाम हनफी हैं इस लिए नमाज़ का हनफी तरीक़ा लिखा जाता है।

दूसरी नमाज़ों की तरह ईदैन की नमाज के लिए भी बदन पाक हो, गुस्ल किया हो, मिस्वाक किया हो वुजू हो बदन पर पाक साफ सातिर लिबास हो जमाअत खड़ी हो तो इमाम नीयत करे, नीयत करता हूँ दो रकअत ईदुल फित्र की वास्ते अल्लाह तआ़ला के मुँह मेरा तरफ क़ाबे शरीफ़ के (ईदुल अजहा हो तो ईदुल अजहा कहे) जाइद छः तक्बीरों के साथ फिर तक्बीरे तहरीमा कहे (अल्लाहु अक्बर) मुकतदी नीयत करे नीयत करता हूँ दो रकअत नमाज़ ईदुल फित्र वास्ते अल्लाह तआ़ला के मुँह मेरा तरफ क़ाबे शरीफ़ के (ईदुल अज़हा हो तो ईदुल अजहा कहे) जाइद छः तक्बीरों के साथ पीछे इस इमाम के अल्लाहु अक्बर कह कर हाथ बांधे, नीयत ज़बान से ज़रूरी नहीं यह बातें दिल में सोच कर तक्बीरे तहरीमा कहें अब सना (सुब्हानकल्लाहुम्मा आखीर तक) पढ़ें, अब इमाम अल्लाहु अक्बर कह कर कानों तक हाथ ले जाकर सीधे छोड़ देगा सब मुकतदी यही करें फिर दूसरी तकबीर इसी तरह होगी, फिर तीसरी तक्बीर इसी तरह होगी और अब हाथ बांध लिये जाएंगे, अब

इमाम किराअत करेगा मुकतदी ध्यान से सुनें, फिर और नमाज़ों की तरह रुकूअ होगा सज्दे होंगे, और दूसरी रकअत शुरुअ होगी इमाम सू–रए–फातिहा पढ़ कर सूरे मिलाएगा फिर तक्बीर कह कर हाथ कानों तक ला कर छोड़ देगा सब मुक्तदी भी यही करेंगे, फिर दूसरी और तीसरी तकबीर इसी तरह कहेंगे, फिर अल्लाहु अक्बर कह कर रुकूअ में जाएंगे और दूसरी नमाज़ों की तरह रकअत पूरी करके, अततहीयात, दुरूद और दुआए मासूरा पढ़ कर सलाम फेरेंगे। अब इमाम जुमे की तरह दो खुत्बे पढ़ेगा, ईदुल फित्र के खुत्बे में उससे मुतअल्लिक बयान होना चाहिए, और ईदुल अजहा के खुत्बे में ईदुल अजहा के मुतअल्लिक बयान होना चाहिए, बस नमाज़ हो गई, ईदैन की नमाज़ में दुआ का ज़िक्र नहीं मिलता, कुछ इमाम नमाज़ के बाद दुआ मांग लेते हैं कुछ खुत्बे के बाद, नमाज़ के बाद लोग गले मिलते हैं इसको सिर्फ रवाज या सकाफत समझना चाहिए, दीन न समझना चाहिए।

प्रश्नः कुछ लोग बकरा वगैरह ज़ब्ह करते हैं और मालदरों की दावत करते हैं, उनसे पूछा जाता है कि यह दावत क्या सद्क़ा या ख़ैरात की है या किसी और चीज की? तो बताते हैं कि सिर्फ अल्लाह के रिजा की, सुवाल यह है कि यहां अल्लाह के रिजा का क्या मतलब है? और ऐसी दावत में शरीक होना कैसा है?

उत्तरः ऐसी दावतें आमतौर पर बलाओं और आफतों को दूर करने या सवाब पहुंचाने के लिए की जाती हैं, अगर उनका मक़सद यही है तो मालादारों को ऐसी दावतों से बचना चाहिए अगर मक्सद यह नही है बल्कि सिर्फ दावत मक्सूद है तो अमीर गरीब किसी को उससे परहेज की ज़रूरत नहीं। बल्कि ऐसी दावत में शिरकत करना सुन्नत है।

(मुस0अब्दुर्रज़्ज़ाक 245/2)

प्रश्नः क्या मेहमान अपने साथ किसी ऐसे शख्स को जिस की दावत न हो ले जा सकता है या नहीं? इसी तरह मेज़बान के दस्तरख़्वान से किसी कुत्ते बिल्ली आदि क़ो खिला सकता है या नहीं?

उत्तरः अगर यह तमाम काम मेजबान की इजाजत से किये जाएं तो दुरुस्त हैं वरना जाइज़ नहीं, फतावा हिन्दीया में लिखा है कि किसी दूसरे के दस्तरख़्वान पर किसी के लिए यह जाइज नहीं कि किसी दूसरे शख्स को कुछ दे, इसी तरह मेजबान के किसी खादिम या बिल्ली, कुत्तों वगैरह को बिला इजाजत मेजबान देने की इजाजत नहीं, हां अगर वहां इसका रवाज हो तो देने में कोई हरज नहीं।

(फतावा हिन्दीया 344)

प्रश्नः क्या गैर मुस्लिम के यहां दावत खाना और उसको अपने यहां दावत में बुलाना दुरुस्त है?

उत्तरः गैर मुस्लिम भाईयों से भी भाइचारे और हमदर्दी का रिश्ता मौजूद है, इस लिए उनके यहां दावत खाना दुरुस्त है, और अपने घर दावत पर बुलाना भी दुरुस्त है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कई बार गैर मुस्लिमों को अपना मेहमान बनाया और एक यहूदी की दावत क़बूल

फरमाई, उलमा ने ऐसी दावत को जाइज़ करार दिया है। (फतावा तातार खानिया 523/5)

प्रश्नः एक शख़्स ने इजतिमाई (सामूहिक) दावत के मौके पर खाने के वक्त जोर से बिस्मिल्लाह कही, कुछ दूसरे लोगों ने ऐसा करने से मना किया, सही बात क्या है बतायें।

उत्तरः मुख्तलिफ़ मौकों के लिए जो पढ़ने की दुआऐं लिखी हैं उनको ज़ोर से भी पढ़ा जा सकता है लेकिन आहिस्ता पढ़ना जियादा बेहतर है, अलबत्ता अगर दूसरे लोग खाने से पहले या बाद में दुआ पढ़ने से गाफिल हों और उनको मुतवज्जेह करने के लिए ज़ोर से बिस्मिल्लाह पढ़ ले तो दुरुस्त है क्यों कि यहां बिस्मिल्लाह पढ़ना जिक्र के तौर पर नहीं बल्कि तल्क़ीन (दूसरे को याद दिलाना) के लिए है इस की गुंजाइश है। फतावा हिन्दीया में है कि जब बिस्मिल्लाह कहो तो ज़ोर से कहो ताकि पास वाले मुतवज्जेह हों (फतावा हिन्दीया 337/5)

प्रश्नः अगर किसी के पास हराम व हलाल दोनों तरह का माल है, तो ऐसे शख़्स की दावत कबूल करना जाइज़ है या नहीं?

उत्तरः अगर आधा माल हराम और आधा माल हलाल हो तो ऐसी दावत से बचना चाहिए, और अगर अक्सर माल हलाल आमदनी से हो तो ऐसी सूरत में दावत कबूल करने की गुंजाइश है, (फतावा हिन्दीया 347/5)

प्रश्नः एक शख्स का बड़ा कारोबार है, हज उस पर फर्ज है लेकिन वह बराबर ताखीर कर रहा है और कहता है जब कारोबार से फुरसत मिलेगी तब हज करूँगा उसके लिए क्या हुक्म है?

उत्तरः ऐसा शख्स जिस पर हज फर्ज हो चुका अगर वह किसी शरई उज्र के बिना हज में ताखीर (देर) करेगा तो गुनहगार होगा।

(दुर्रेमुख्तारः 2/455)

प्रश्नः जो लोग अरब देशों में नौकरी करते हैं क्या वह माँ बाप की इजाजत के बिना हज कर सकते है?

उत्तरः हज एक शरई फरीजा है जिस पर फर्ज हो गया उसके लिए उसका अदा करना जरूरी है मजकूरा शख्स जब अरब देश में नौकरी करता है और माँ बाप उस पर राजी हैं तो ऐसी सूरत में हज के लिए माँ बाप की इजाजत ज़रूरी नहीं है। हज के लिए माँ बाप की इजाजत उस वक्त ज़रूरी है जब कि माँ बाप को उनकी खिदमत की ज़रूरत हो।

(गुनीयतुन्नासिकः 34)

प्रश्नः एक शख़्स ने इतने पैसे जमा किये कि उस पर हज फर्ज हो गया, वह हज पर जाने को तैयार है लेकिन लोग कहते हैं कि पहले वालिद को हज कराओ या वालिद को भी साथ ले जाओ जब कि उसके पास सिर्फ अपने हज भर के पैसे हैं, उसके लिए क्या हुक्म है?

उत्तरः वालिदैन की रजामंदी को बिला शुब्हा मुकद्दम रखे (प्राथमिकता दे) लेकिन जब खुद पर हज फर्ज हो जाये और इतनी वुसअ़त न हो कि अपने साथ वालिदैन को भी हज करा सके तो ऐसी सूरत में खुद अपना हज करे। बाद में जब वुसअ़त हो तो वालिदैन को भी हज करा कर सवाब ले। (फतावा हिन्दीया 1/216)

प्रश्नः एक शख़्स के पास इतने रूपये हैं कि वह हज कर सके लेकिन उसके पास मकान नहीं है अब वह पहले मकान बनाये या हज करे?

उत्तरः जब किसी मुसलमान के पास इतना माल हो जाये कि हज कर सके तो उस पर हज फर्ज हो जाता है चाहे ज़ाती मकान में न रहता हो उसको चाहिए कि वह हज अदा करे यह ऐसी बरकत वाली इबादत है कि उस की बरकत से दूसरी ज़रूरतें भी पूरी हो जाती हैं हदीस में आया है कि हज और उमरा फिक्र चिन्ता और गुनाहों को दूर कर देते हैं।

(तिर्मिजी, हदीसः 810)

प्रश्नः अगर किसी के पास इतने पैसे हों कि वह हज कर सके लेकिन उसकी लड़की जवान और शादी के लाइक है अब अगर वह लड़की की शादी करे तो हज के लिए पैसे नहीं बचते हैं और अगर हज करे तो शादी रह जाती है ऐसी सूरत में वह पहले क्या करे?

उत्तरः अगर कोई मुनासिब रिश्ता मिल जाये तो सादगी के साथ शादी कर दी जाये और फर्ज अदा किया जाये अगर ऐसा मुमकिन न हो कोई मुनासिब रिश्ता बगैर पैसा खर्च किये न मिल सके और लड़की के लिए गुनाह का खतरा हो तो चूंकि गुनाह से बचाना किसी फरीजे की अदायगी पर मुकद्दम है (प्राथमिकता रखता है) इसलिए ऐसी सूरत में पहले लड़की का निकाह किया जाये फिर इस्तिताअ़त (सामर्थ्य) हो तो हज करें अल्लामा शामी ने लिखा है कि "यानी इज़्ज़त को खतरा हो तो उसका बचाव हज पर मुकद्दम है इसलिए कि उसके छोड़ देने में दो बड़े गुनाह हैं एक तो वक्त पर निकाह करने का फर्ज छोड़ना दूसरे बेइज्जती का खतरा मूल लेना"।

(देखिए रद्दुल मुहतारः2/461)

प्रश्नः एक शख़्स अपना फर्ज हज अदा कर चुका है लेकिन उसके पास इतना माल है कि वह नफ़्ल हज कर सकता है मगर ख़ानदान और अजीजों में कुछ नौजवान बच्चियाँ हैं जो बे बाप की हैं (उनके बाप का इन्तिकाल हो गया है) और गरीब भी हैं इस माल से उन गरीब और बिन बाप की बच्चियों की शादी करवा देना अफ़्जल है या नफ़्ल हज करना?

उत्तरः हिन्दुस्तान में औरतों की शादी की जो कठिनाइयाँ हैं और गरीब तथा बे सहारा बच्चियों की मदद जिस क़द्र अहम है उसको सामने रखते हुए उन गरीब और बे सहारा बच्चियों की मदद उनकी शादी कराना जियादा अहम हैं। अल्लामा शामी ने लिखा है कि सद्का नफ़्ल हज से अफजल है।

(मिनहतुल खालिकः 2/310)

❖❖❖

दुआए मग़फ़िरत

24 जून को दफ़्तर के एक ख़ादिम मुहम्मद ताहिर बहलीमी की अहलिया का इन्तिक़ाल हो गया इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। पाठकों से दुआए मग़फिरत का अनुरोध है।

मानवता का संदेश

—अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी

मानवता की रक्षा कर हम, विश्व शान्ति दिख लायेंगे।
प्रेम, अहिंसा, भाई चारा, का हम पाठ पढ़ायेंगे।।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई एक पंक्ति में आयेंगे।
मानवता के अच्छे गुण हम, एक साथ मिल गायेंगे।।

ऋषि, मुनि और वलियों ने तो, प्रेम का पाठ पढ़ाया है।
अनुयाई हम उनके हैं, हम प्रेम का पाठ पढ़ायेंगे।।
हिन्द में जीना, हिन्द में मरना, हिन्द में कब्र बनाना है।
हिन्द में हमने जन्म लिया है हिन्द का गुण हम गायेंगे।।

सोने की चिड़िया की रक्षा, मिल जुल कर हम करते हैं।
आँच वतन पर आई अगर, तो ज्वाला मुखी जलायेंगे।।
धर्म अलग है जाति अलग है, फिर भी भाई चारा है।
मानवता की रक्षा की हम, मिल जुल ज्योति जलायेंगे।।

मानव सेवा धर्म की रक्षा, हम सब का यह नारा है।
हम सब भारत वासी हैं, दुनिया को सीख सिखायेंगे।।
मानव रक्षा देश की रक्षा, यह संकल्प हमारा है।
बाधक बना अगर कोई तो, उसको सबक सिखायेंगे।।

सिद्दीक़ी गुण गान गा रहा, मानवता की रक्षा का।
एक साथ मिल कदम बढ़ायें विश्व शान्ति दिखलायेंगे।।

–पिछले अंक से आगे

इस्लाम में विवाह

–इदारा

6. वलीमे में नाम नमूद, रिया (दिखावा) और फुजूल ख़र्ची न होना चाहिएं जिन को अल्लाह ने दे रखा है दूसरे उम्मत के ज़रूरी कामों में ख़र्च करके सवाब कमाएं, और पता लगाएं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद वलीमा किस प्रकार किया था। हज़रत अली, हज़रत उस्मान, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि0 के वलीमों का हाल मालूम करें।

7. शादी विवाह या किसी पर्व में अनावश्यक लाइटिंग फुजूल ख़र्ची है इससे बचें और इस का पैसा निर्धन अनाथों विधवाओं की सहायता में खर्च करें।

8. मंगनी हो जाने के बाद कुछ फारवर्ड लोग लड़की लड़के को बे रोक टोक मिलने देते हैं इस्लाम में निकाह से पहले इसकी अनुमति कदापि नहीं है।

9. कुछ बिरादरियों में या कुछ फारवर्ड लोगों में मंगनी या बारात में औरतें भी जाती हैं यह इस्लाम में अप्रिय है। पहली बात तो बारात ही का कोई सुबूत नहीं अगर लड़का अपने क़रीबी अजीज़ों के चार छे लोगों के साथ लड़की वाले के दरवाज़े जाकर निकाह पढ़वा कर दुल्हन ले आता है तो कोई हरज नहीं लेकिन बड़ी संख्या में धूम धाम से लड़की वाले के दरवाज़े जाना और कभी बाजे गाजे के साथ जाना जिसे बरात या बारात कहा जाता है इसकी निकाह की इबादत के साथ कोई गुंजाइश नहीं यह एक इबादत की शक्ल को बिगाड़ना हुआ और औरतों का दूल्हा के साथ जाना यह तो और ख़राब बात है जिसमें आम तौर से बेपर्दगी होती है, गहनों तथा वस्त्रों की नुमाइश होती है यह तो हराम ही है।

10. कुछ जगहों पर देखा गया कि लड़के की हैसियत से बहुत जियादा महर रखा जाता है यह भी बड़ा ऐब है महर उतना ही हो जिसे लड़का अदा कर सके।

11. कभी देखा गया है कि घर या ख़ानदान में जो बड़ा बूढ़ा हुआ या अधिक पढ़ा लिखा हुआ उसी को लड़की का वली बना दिया जाता है या वह खुद वली बन बैठता है। शरीअत ने वली नियुक्त किये हैं, जब क़रीबी वली मौजूद हो तो न दूर का वली हो सकता है न खानदान का कोई बड़ा बूढ़ा वली हो सकता है वलियों की तर्तीब (क्रम) इस प्रकार है–

सबसे पहले बाप वली है, बाप न हो तो दादा, दादा न हो तो पर दादा, इनमें से कोई न हो तो सगा भाई, सगा भाई न हो तो बाप की ओर से सौतेला भाई वली है, यह भी न हो तो भाई का लड़का (भतीजा) यह भी न हो तो सगा चचा वह भी न हो तो बाप का सौतेला भाई अर्थात सौतेला चचा अभी बयान चला जा रहा है लेकिन इनमें से कोई न कोई आम तौर से रहता है इसलिए इतने ही पर खत्म करता हूँ। यह

याद रहे कि औरत वली नहीं हो सकती न ना बालिग़ लड़का। कभी लड़की का बाप नहीं होता तो लोग मां को वली समझ बैठते हैं यह ग़लत है।

गरज की मुसलमानों ने शादी विवाह में हिन्दू भाइयों की संगत से जो रस्में अपना ली हैं उनको तर्क कर के हिन्दू भाइयों को भी दिखाना और बताना है कि इस्लामी विवाह क्या है और कितना सरल है।

दुल्हन रुखसत हो कर जाती है अब वह अपने पति की पत्नी है तथा ससुराल के कुल की एक मिम्बर है, उसके साथ विभिन्न प्रथाएं व्यर्थ हैं, छोड़ देने योग्य है।

निकाह के पश्चात सब से महत्वपूर्ण दोनों में प्रेम होना, एक दूसरे के हुकूक अदा करना और अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताए हुए तरीके से जीवन बिताना है।

याद रखें मुसलमान इस्लाम का अमली (कृयात्मक) मुबल्लिग़ है यदि उसने इस्लामिक ज़ीवन को शुद्ध न रखा तो अशुद्ध इस्लामिक जीवन की तब्लीग़ करने का पाप करेगा।

चिटठी द्वारा निकाह– पीछे लिखा जा चुका है कि निकाह़ में एक ईजाब होता है दूसरा क़बूल, इनमें से एक चिटठी द्वारा हो सकता है दोनों नहीं।

कोई वली अपनी लड़की या करीबी के निकाह़ के लिए जिस का वह वली हो उससे अनुमति लेकर किसी को चिटठी में लिखे कि मेरी लड़की या फुलां लड़की का निकाह अपने साथ कर लो या फुलां के साथ कर दो मेरी ओर से अनुमति है। अब यह शख़्स उस चिटठी के आधार पर कम से कम दो आ़किल बालिग़ मुसलमानों की मौजूदगी में खत पढ़े और कहे मैंने कबूल किया या अगर दूसरे के लिए लिखा है तो उसको खत सुनाए वह कह दे मैंने क़बूल किया तो निक़ाह हो जाएगा। चिटठी में लड़की का नाम पिता के साथ लिखा हो पूरा पता भी हो और महर भी लिखा हो। अब लड़की या उसके वली को चिटठी द्वारा निकाह़ हो जाने की सूचना दी जाए। परन्तु चिटठी द्वारा इस प्रकार निकाह़ किसी विवशता ही पर होना चाहिए, इसको आ़म रिवाज न देना चाहिए।

टेलीफोन से निकाह़– इसी प्रकार सख़्त ज़रूरत पर बालिग़ लड़की या उसका बाप टेलीफोन से किसी को वकील बना दे कि मेरा निकाह या बाप कहे मेरी फुलां लड़की का निकाह फुलां से इतने महर पर कर दीजिए अब यह वकील दो ऐसे आ़किल बालिग़ मुस्लिम गवाहों के सामने जो लड़की और लड़के के वली से परिचित हों ईजाब व क़बूल करा दे तो निकाह हो जाएगा।

यहाँ यह बात ज़रूरी है कि वकील यक़ीन कर ले कि टेलीफोन करने वाला वही है जिसको वकील बनाने का हक़ है आज कल तो मोबाइल हैं वकील टेलीफोन पाते ही खुद फोन करके तस्दीक करले या आवाज़ पहचानता हो।

❖❖❖

हाजी अब्दुर्रज़्ज़ाक की वफ़ात

—सम्पादक

हाजी अब्दुर्रज़्ज़ाक रह0 हज़रत मौलाना अली मियाँ रहमतुल्लाहि अलैहि के चौबीस घण्टों के खादिमें खास (विशेष सेवक) थे। मेरा गुमान है उन्होंने हज़रत मौलाना की चालीस वर्षों से अधिक सेवा की, इस लम्बे समय में हज़रत मौलाना उनसे कभी नाखुश न हुए, हज़रत मौलाना के घर के सभी लोग हाजी साहब का बड़ा ख़याल रखते उनमें भी कोई कभी हाजी साहब से नाखुश न हुआ।

हाजी साहब रात को जागने वाले, तहज्जुद पढ़ने वाले अल्लाह का ज़िक्र करने वाले रोजाना तिलावत करने वाले, हज़रत मौलाना के मेहमानों का इकराम और उनकी खिदमत करने वाले बड़े अच्छे इन्सान थे, चूंकि मैं भी हज़रत मौलाना की खिदमत में बहुत रहा हूँ इसलिए हाजी साहब को करीब से देखने का मौक़ा मिला वह मेरे गहरे दोस्तों में थे। हज़रत मौलाना की वफात के बाद भी वह नदवे में या तक्ये पर हाजिर रहते और नाजिम नदवतुल उलमा सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी दामत बरकातुहु का हर हुक्म बजा लाते। इन दोनों बड़े बुजुर्गों की खिदमत के सबब नदवा के असातिज़ा और अमले में हाजी साहब की बड़ी इज़्ज़त थी, लेकिन इधर कुछ दिनों से अपनी कमज़ोरी के सबब अपने घर नसीराबाद में रहने लगे थे फिर भी रमजान वह तक्ये पर गुजारते थे।

4 रमजान जुमेरात को फ़ज्र के बाद मौलाना नियाज अहमद बस्तवी की इयादत को तक्ये से मैदानपुर गये फिर वहां से रेलवे लाइन के किनारे टहलने चले गये। वहां वह रेल की पटरी के किनारे मुर्दा पाये गये इन्नालिल्लाहि व इन्ना अलैहि राजिऊन। उनकी वफात की खबर तक्या वालों को बहुत देर से हुई यहां तक कि पुलिस उनको पोस्ट मार्टम के लिए उठा ले गई। खबर होने पर घर के लोगों में कुहराम मच गया, जुमे को लाश पोस्ट मार्टम के बाद तक्या लाई गई और यहीं जुमे की नमाज़ के बाद तक्ये के कब्रिस्तान में तदफीन हुई, नदवे का पूरा स्टाफ और रायबरेली की कसीर तादाद ने नमाज़े जनाज़ा और तदफीन में शिरकत की। अल्लाह तआला हाजी साहब की मग़फ़िरत फरमाए और घर वालों को सब्र की तौफीक से नवाजे, आमीन! हाजी साहब के बड़े बेटे मौलाना शब्बीर अहमद नदवी, माहद दारुल उलूम (सिकरोरी) में मुआविन नाजिरे माहद और उस्ताद हैं। इनके अलावा हाजी साहब के तीन बेटे और तीन बेटियां हैं अल्लाह तआला इन सबको सेहत व आफ़ियत से रखे। तमाम पाठकों से उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की दरख़्वास्त है।

❖❖❖

उर्दू सीखिये

—इदारा

गतिशील हिन्दी अक्षरों के उर्दू रूप

हिन्दी	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
उर्दू	اَ	آ	اِ	اِی	اُ	اُو	اِے	اَے	اُو	اَو
हिन्दी	क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ
उर्दू	کَ	کا	کِ	کِی	کُ	کُو	کِے	کَے	کُو	کَو
हिन्दी	ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ
उर्दू	کھَ	کھا	کھِ	کھِی	کھُ	کھُو	کھِے	کھَے	کھُو	کھَو
हिन्दी	ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ
उर्दू	گَ	گا	گِ	گِی	گُ	گُو	گِے	گَے	گُو	گَو
हिन्दी	घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ
उर्दू	گھَ	گھا	گھِ	گھِی	گھُ	گھُو	گھِے	گھَے	گھُو	گھَو
हिन्दी	च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ
उर्दू	چَ	چا	چِ	چِی	چُ	چُو	چِے	چَے	چُو	چَو
हिन्दी	छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ
उर्दू	چھَ	چھا	چھِ	چھِی	چھُ	چھُو	چھِے	چھَے	چھُو	چھَو
हिन्दी	ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ
उर्दू	جَ	جا	جِ	جِی	جُ	جُو	جِے	جَے	جُو	جَو
हिन्दी	झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ
उर्दू	جھَ	جھا	جھِ	جھِی	جھُ	جھُو	جھِے	جھَے	جھُو	جھَو
हिन्दी	ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ
उर्दू	ٹَ	ٹا	ٹِ	ٹِی	ٹُ	ٹُو	ٹِے	ٹَے	ٹُو	ٹَو

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

मिलता-जुलता नाम नहीं रख पाएगी कोई पार्टी—

राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय राजनीतिक दलों से मिलते जुलते नाम पर नई राजनीतिक पार्टी का गठन अब नहीं किया जा सकेगा। निर्वाचन आयोग ने इस तरह के पंजीकरण पर फौरी रोक लग दी है।

लोक सभा चुनाव के दौरान कई राजनीतिक दलों ने मिलते जुलते नाम वाली पार्टियों के कारण नुकसान की शिकायत आयोग में दर्ज करवाई थी। कई सीटों पर नजदीकी मुकाबले में हारे राजनीतिक दलों ने मिलते जुलते नाम वाली पार्टियों पर वोट काटने और चुनाव प्रभावित करने का आरोप भी लगाया है।

शिकायतों की समीक्षा के बाद आयोग ने इस बारे में नए दिशा निर्देश जारी कर दिए हैं। आयोग के मुताबिक लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 29ए के तहत वर्तमान में मान्यता प्रापत राष्ट्रीय और राज्य स्तर के राजनीतिक दलों के हिन्दी, अंग्रेज़ी या किसी अन्य क्षेत्रीय भाषा में रूपांतरित नाम या मिलते-जुलते नाम से नए राजनीतिक दल का पंजीकरण नहीं होगा। नए पंजीकरण के लिए अलग नाम देने होंगे।

1971 से पहले आने वाले बांग्लादेशी भारतीय—

अपने एतिहासिक फैसले में मेघालय हाईकोर्ट ने कहा कि 24 मार्च 1971 से पहले राज्य में बस गए बांग्लादेशी भारतीय नागरिक हैं।

इसी के साथ अदालत ने उनके नाम को मतदाता सूची में शामिल करने का आदेश दिया है। यह फैसला 40 से अधिक उन शरणार्थियों की याचिका पर आया है, जिन्हें जिला प्रशासन ने यह कहते हुए मतदाता सूची में पंजीकरण से वंचित कर दिया कि उनकी नागरिकता संदिग्ध है।

उपायुक्त ने इन शारणार्थियों के नागरिकता प्रमाणपत्र भी जब्त कर लिए थे, जिसके खिलाफ उन्होंने कोर्ट में याचिका भी दायर की थी।

सभी याचिकाकर्ता मेघालय के रिभोई जिले स्थित आमजोंग गाँव के निवासी हैं। यह गांव असम सीमा के नजदीक है। न्यायमूर्ति एस आर सेन ने 15 मई को अपने आदेश में जिला उपायुक्त पूजा पांडे को याचिकाकर्ताओं को प्रमाणपत्र लौटाने तथा अगले चुनाव से पहले उनके नाम मतदाता सूची में शामिल करने का निर्देश दिया।

न्यायमूर्ति सेन ने कहा कि दोनों देशों के बीच इस बात की स्पष्ट समझ है कि किसे रहने दिया जाए और किसे बांग्लादेश वापस भेजा जाए।

अल्पसंख्यक कल्याण—

सरकार अल्पसंख्यक समुदाय में आधुनिक और तकनीकी शिक्षा का प्रसार करने के उपायों को विशेष तौर पर कारगर बनाएगी। इसके लिए "राष्ट्रीय मदरसा आधुनिकीकरण कार्यक्रम" शुरु करेगी। स्वतंत्रता के इतने दशकों बाद भी अल्पसंख्यक समुदाय गरीबी से पीड़ित है उन तक सरकारी स्कीमों के लाभ पहुंचाए जाएंगे।

❖❖❖